

ST. JOSEPH'S COLLEGE, NAINI TAL — CONDUCTED BY THE CHRISTIAN BROTHERS

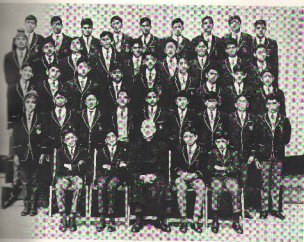


College Review 1971

CONTENTS

	Page
Dedication	5
George Saupin	8
Our Appreciation	9
Classes 1971	10
Sisters of St. Anne	27
Hindi Teachers	28
Science Teachers	29
Office Staff	30
Class Monitors	32
Teachers' Day 1971 at St. Joseph's	33
First Communions	34
A Wonderful Achievement	36
An Adieu	38
College Sports—1971	39
The Independence Day Cup Final—1971	49
Tennis	53
The 20th U.P. State and Inter-District Table Tennis Championship	56
Our Annual Aquatic Meet	63
The Inter-Class Boat Race	68
The Scouts of Sem	74
The First National Convention on Camping	76
The I.S.C. Class Picnic	77
Our Class Picnic	78
A Visit to Kedarnath	80
A Visit to Kashmir	83
The Tree Planting Ceremony	85
My Report Card	87
Spot Light	89
History of St. Joseph's College	90

Class IX



(L. to R.)

Seated : B. Sah, M. Mehertra, Bro. Duff, A. Pandey, D. Negi.

1st Row : A. Bharti, R. Jais, P. D. Shah, R. Bhatt, S. Kishore, M. Sah, V. Sharma, A. Seth, R. Gupta.

2nd Row : V. Keshav, R. Sami, J. Lila, K. Dhama, S. Mehra, N. Tewari, M. Bawaria, V. Hingorani, S. Kalra.

3rd Row : D. Grewal, S. Soni, K. Sharma, S. Shamsud, A. Choudhary, R. Rana, L. Gohari, A. Khanna, A. Sah.

4th Row : G. Pant, P. Karmal, A. Vaidy, V. Puri, M. Verma, S. Rana, R. Ahuja, P. Puri, R. Kauria.

over, bagging a gold medal in the recent Competitions at Seoul—was in itself a privilege and an honour indeed.

My father and I left for Delhi by jeep on 16th August. We stayed in U.P. Niwas, a beautiful place near Ashoka Hotel, but quite far from the Republic Day Parade Grounds where the camp was to be held. I was very tired after the long journey and next day my score was hardly satisfactory. But my father kept encouraging me and everyday there was an improvement. On August 19th, the last day of my practice, I shot 27 out of 25—84% ! I had qualified for the trials. I could hardly believe my performance.

Trials started on August the 20th and in the first three strings my score was $\frac{11}{11}$, $\frac{9}{11}$ and $\frac{8}{11}$ i.e. 83 out of 75—a remarkable feat. At that time I was second amongst the shooters, the first being the Maharaja of Bikaner. Then bad luck started coming my way. I was hit on the cheek by the terrific recoil of an American gun, and my face started swelling. I was in great pain when I went for the fourth string and my score fell to $\frac{7}{11}$. The total for the day was 84 out of 100 and I was tied with Mr. Man Singh for the third place.



This was not at all bad but the pain in my cheek grew worse during the night. Inspite of balms and liniments I turned up at the range on the morning of 21st August with an inflamed face. I wanted to withdraw but my father egged me on. My score fell considerably and in the Trials I ended up with of 162 out of 200, my position being fifth amongst the trapshooters.

It was considered a creditable performance by all the people but in my heart I was not at all happy because I had not qualified for the National Column at Seoul, and Bologna had not materialised.

Not long afterwards, another news item brought me a ray of hope. The N.B.A.I. had recommended 18 shooters for the Indian team to Seoul

and I was one of them. Could this be true? Yes, it was. The N.R.A.I. wanted to encourage young, promising shooters and wanted me to go along with the team. The Government unfortunately turned down the proposal and only 11 shooters were included in the team. Bad luck indeed!

It was thus that I missed the plane to Seoul. But I must practise and persevere. Munich beckons to me in 1972.

Sharukh Shamsiadi

Class IX.

मेरा स्वप्न

मेरा स्वप्न ! मेरा स्वप्न ? यहाँ लोग भी उसरीस करत बसु ब सर जी-जी- रसन के मयान केमनिक बनना चाहते हैं, केमनिक मुमान चरु बोल व सरदार बरुनसिंह जैसे देसभक्ति के आर्षेय बनने की कामना रखते हैं। क्या खाकी बिदेकालन्य और आकाश बिदेता भाव की खेरी के बिद्वान बनने की चाह रखते हैं, यहाँ जीवन में एक उलकुर बिचित्रक बनने का मेरा स्वप्न सुद बरता है । बड़े खीरी की कुल भी लगे, अपना यह स्वप्न मेरे मन में सदा बरता रहेगा ।

मैं एक ऐसा डॉक्टर बनना चाहता हूँ जो दुर्गों में जान कुँक कर, उन्हें बरुनकी के हाथ के लीन कर संसार में लाम और उन्हें जीने की सक्ति प्रबल करे । एक ऐसा डॉक्टर बनने की हासिक रण्य मेरे मन में है जो बिस्वाच बरु के मानव भाव की सेवा करें और अनेकालन्य दुल सह कर भी अन्य लीरी के कुल दूर करे । इस सम्पन्न में अकरीकन बिचित्रक दाम दुली का आकाश मेरे सम्पुन है । वे अमरीस का बिद्वानदुर्ग जीकन खीर कर, दलिन कुँक एरिया में एक बिचित्रक दल लेकर आये सदा यहाँ के बिचित्रकी की अरिम समय तक सेवा करते हुए यही स्वर्गवासी हो गये । उनके अरिमिक डॉक्टर देविज बिचित्रकन, की दलिन-बरीका के अरिमक लनी में मलन जाति की सेवा का पवित्र एवं उल्ल भाव लेकर गये थे, और यही पर देह स्थान कर बिन्हीने संसार के सम्पुन सेवा का एक अरुर्ग उल्लहरन सम्पुन किया था, यहा मेरा पक-उदशेन करते रहिये ।

यदि संभव हुआ तो मैं एक चलता-बिरता अममाल म्बडलिक ककका और इस बरुनक में अपने उन करोड़ी देसकालिकों की सहायता ककका जो बरिदता के कारण अकका बिचित्रता की मुविदता व होवे के कारण खीरी में वीकित होकर इस दुल्ली पर नरक सहा जीकन ख्यतीस कर रहे हैं । मैं इस संसार की असमय व अनारन ही खीर देने वाले बरुनिकों की संस्था को अकक परिधम में कम करने की केसा ककका । मेरा लल्ल यहा लीरी के शारीरिक और सति संभव हो तो मालीकन दुली की दूर बनना रहेगा । मैं अब तक कर सकुँका तक तक बलुध बरति बर बना ककका । यही है मेरा स्वप्न !

मुनीष कुमार रैन
ककका ११

एक दुर्घटना

सायबान का जन्म था और मुझे भी पुनर्जन्म फिरसे हुआ के वक्तों में अन्तिम विदाई में रही थी । मेरी पर गली कहकरहोने हुए गाँव में विद्यालय का प्रवेश कर रहे थे । चारों की संख्या के इस मुकाम पर आकर्षक रूप में मोहित हो कर मैं बहुतसा हुआ गया था रहा था ।

मोड़ी केर बाद में एक कर एक पुलिसिया घर बंद गया और वहाँ के मुखरों हुए गाँवियों एवं आहूतों को देखने लगा । कुछ समय के पश्चात् मैंने ही व्यक्तिगतों को एक सादरिज्य कर जाने हुए देखा । मैं आली बैठा था इसलिये बहुतक उसकी ओर देखता रहा । अचानक मैंने उसी ओर के एक गीत गति में जाती हुई मोटर को देखा । जब मोटर सादरिज्य के बहुत बाद था तभी तो सादरिज्य-वाचक किता अपने आँखों-सीने के बीच बहुत कर करने लगा । जब मोटर के हाइड्रॉलिक ने पहुँ देखा तो उसने तुलना बंद लगाया लेकिन मोटर तेज चल रही थी और एकदम रुक न सकी । हाइड्रॉलिक को बचाने के सभी प्रयास विफल रहे और मोटर व सादरिज्य की ओर में रुककर हो सकी । उसके के सातव सादरिज्य पर बैठा हुआ एक आकर्षक ही सड़क के किनारे फिर जहाँ और हुआ उसका कर मोटर के हुए पर था तथा और फिर मोटर के सीने में मोट आकर सीने फिर गया ।

जब हाइड्रॉलिक ने देखा कि कोई भी व्यक्ति अधिक पापन नहीं हुआ है तो उसने अपना रास्ता पकड़ा । लेकिन मोटर अभी चली ही थी कि साइने में जाने हुए एक साँचे के कुछ गुणाधिकर उभरे के कुछ कर उतारे और उन्होंने बीच मार्ग में पड़े हो कर मोटर रुकवा दी । उन्होंने हाइड्रॉलिक को उतरावाया और उसे बांधने लगे । अब तक बहुत के सीने कटका-नमक पर एकविन हो गए थे और मैं भी नहीं बचा हो कर इस घटना की देख रहा था ।

जब सीने हाइड्रॉलिक पर आने के बाद का आगेय लगा रहे थे और केकरे हाइड्रॉलिक को जान की कोई नहीं पुन रहा था । जब सीने हाइड्रॉलिक को बार कर बहुत हो गये तो उन्होंने मोटर के सीने की इन दो पापन सादरिज्य जाने व्यक्तिगतों को अलगनाम के जाने का आदेश दिया । मैं जब-बराईन के लिए उन ही व्यक्तिगतों के साथ, मोटर में बैठ गया । हमें जान हुआ कि सादरिज्य-वाचक हमारे व्यक्ति को अलगनाम केत विचारने में था रहा था । जब सादरिज्य-वाचक ने मोट में से कुछ जान-गुहायन वालों की जानी सादरिज्य के किन में बसा बिना ही हम लोग घटर के एक साइडर के पर की ओर गये ।

सीमाप्रायत साइडर पर पर ही थे और उन्होंने सीने व्यक्तिगतों की जान बचाने कहा कि उनकी कोई हड़की-दमकी नहीं हूटी थी और केवल उनकी मोट आई थी । दुर्घटना का समाचार सुनकर एक व्यक्ति को गली की गली आ पहुँची और गो-गो कर मोटर के गाँवियों की कोझने लगी । हमने उसे बहुत कहिनाई में समझाया कि उसके गति को अधिक मोट नहीं करनी थी । मोटर के गाँवों सीने व्यक्तिगतों को उता के पीछे से कर अपने मार्ग पर चल गये ।

संजय कान्त

पृष्ठा १०

प्रथम विश्व हॉकी प्रतियोगिता

फिर से एक बच्चे के नीचे एकता की भावना को स्थापित करने के लिए संसार के सब देशों ने एक अतिथीविराज आरम्भ की। पाकिस्तान ने इस अतिथीविराज के लिए एक पुरस्कार पेट किया। यह पोटो का एक आलयेक ग्रीक है जिसके ऊपर दो 'एथी-विशाल' बनी है। यह ग्रीक आलयेक के जीवन पर विश्वास है जिसने उसकी सुन्दरता को बार बार सब देने है।

जिस देशों ने इस अतिथीविराज में भाग लिया उन्हें कुछ नियमों का पालन करना था। वे सब नियम विश्व-व्यापक व एकता के अर्थों में हीन इन्हीं सेन एक विश्वासीयों की सुरक्षा होती है।

इस अतिथीविराज का यह प्रथम वर्ष का और यह ग्रीक में रिशत आरसीजीका नामक सहर में आयोजन हुई। सब नाम लेने वाले देशों को दो समूहों में बांटा गया और प्रत्येक देश की टीम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बहुत जोश से खेली। खेल, विश्वासीयों के उत्साह के कारण देखने योग्य थे। पहले टीम ने अपने विरोधियों को हराते का अत्यन्त प्रयत्न किया। हर दिन के विश्वासीयों ने अपनी प्रशंसा के साथकर अपना नाम उल्लेखित किया।

आरत को, जो कि दुनिया का सर्वोत्तम खिलाड़ी रहा है, अपने सबसे निम्नतम अतिथीयों, पाकिस्तान का साक्षात् करना था। इस खेल में सबसे बड़ा आशा थी कि भारत विजयी होकर फिर, के अपना पूर्ण जीवन प्रदान कर लेगा।

आरसीजीका के विशाल मैदान में दोनों टीमों की मुठ-भेंट हुई और दोनों ही दुनिया के सर्वोत्तम खिलाड़ी अपने के लिए जी जान से खेलें। जब भारत ने पाकिस्तान पर पहला गोल किया तो आरसीजीका खिलाड़ियों में हुआ जोश आ गया और वे विजय के स्वप्न देखने लगे। लेकिन पाकिस्तान ने हिम्मत न हारी और भारत पर एक गोल कर, दिया जिससे दोनों टीमों काकावर हो गई।

जब पाकिस्तान के अद्भुत खिलाड़ियों ने अपना जीवन दिया। भारतीय खिलाड़ियों के अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी वे पाकिस्तान पर गोल न कर सके। पाकिस्तान ने भारत के विपक्ष 'एथी-विशाल' ने इस पर विजयी होने के लिए गोल किया। खेल की समाप्ति पर पाकिस्तान विजयी हुआ और उसने हमें एक गोल के मुकाबले दो गोल दे हुए दिया।

पाकिस्तान ने पुरस्कार जीत लिया। भारतीय खिलाड़ियों को एक बड़ा अनुभव हुआ। अब हम आशा कर सकते हैं कि आगामी वर्ष की अतिथीविराज में भारतीय खिलाड़ी अपना जीवन विश्वासीयों के सर्वोत्तम खिलाड़ी बन जायेंगे।

अभि विष्णु

शिकार

धी धीसम सबों की दुलस 'शिकार' करने के बाद मुझे भी शिकार लेवने का सोच करीया । पिछले साल वार्षिक परीक्षा के सम्बन्ध मुझे यह सोच पुरा करने का बहुत अवसर मिला और मैं अपने पांच मित्रों के साथ 'शिकार' के लिए निकल पड़ा ।

हम नै जंगल के लड़की ही एक जगह में पहुँच गये । एक रात करीब आठ बजे हम सब शिकार की खोज में निकल पड़े । हमारे पांच पाँच टोर्न भी और केवल दो कुत्ते । चारों ओर रात का अँधकार फैला हुआ था और हम पाँच भाइयों के बिने एक जल जगह पर घटकते हुए खम रहे थे ।

हम सोच रहे थे कि हम किसी ढेर और नीली का शिकार करेंगे और अपने बगलालों को सब के साथैके लि हम लीम बहुत शिकारी हैं । अमानक सेके भाइयों में दो जमनाही हुई आँखों को देखा और मेरे होश-हवास मुम हो गये । मैं आठ देखा न गाव, अपनी टोर्न और कुत्तों को रोक कर बीच मारी और लगे रैर माना । मेरी बीच इस जंगल के साफदे में हुँव उड़ी । मेरे लंबी बिच कर के कारण पैरों की ओर होलने लगे मेडिन डिमी को पद पर चढ़वा की तो बड़ी आता था । हम सब पद के तने की आद में छिपकर खड़े हो गये । एक अभावे में मानने का प्रयास किया किन्तु उसका पैर कुछ भाइयों में उलका गया और वह बड़ी पर मिर पड़ा ।

हम सब कर के सोच रहे थे । पर की बात आ रही थी । मैंने निश्चय कर लिया कि यदि इस बार सब गया तो सोचन 'अ' शिकार का काम तक न लूँगा । भाइयों में वह खुँसार जानकर घाल लगाने बैठा था और वह अपनी जमनाही बाँकी से हमारी ओर दकलकी लगाने देस रहा था । मैंने चुनके-चुनके मानने का शिकार किया परन्तु कर के मारे मेरा लगीर लिथिन हो गया था । सबको जान प्यारी थी । करीब दस मिनट तक हम सोच सुनिमी के समान निचर रहे । के दस मिनट दस बंदी में की लम्बे घणित हुए । आखिर वह समानक जानकर आक्रमण क्यों नहीं कर रहा था ? यह प्रश्न बार-बार मेरे मन में उठ रहा था । अन्त में मैंने बहुत हिम्मत करीर कर टोर्न उठावी और भाइयों में छिो हुए जानकर की ओर जमनाही । मैंने सोचा कि अब तो वह खुँसार जानकर अवश्य ही हम में से किसी की हाथा कर देगा परन्तु वह देस कर में आसमने बलित रहे गया कि एक बार बड़ी बैठी चुनली कर रही थी और हकली और बड़े पैर से देस रही थी ।

जब भी इस शिकार के बीच की मुझे बात आती है तो अपनी और अपने मित्रों की यादगला कर हँसी आ ही जाती है ।

हर्षवीर चौधरी

Sem during 1971

JANUARY

The usual repairs were carried out on the school building. A new concrete verandah has replaced the old one around the S.C. balcony. The weather was beautiful and so good progress was made. Br. O'Shea replaces Br. Moynihan on the staff. Br. Moynihan has been transferred to St. Edward's, Simla. We wish him the very best of luck in his new sphere of work.

FEBRUARY

Repairs and improvements are still going on.

MARCH

- 6th. The boys were to have arrived today but on account of the "Go-slow" on the airways several boys from Calcutta, Bombay and overseas who flew to Delhi did not reach in time and so the party stayed over-night at St. Columba's. We are most grateful to the Brothers of St. Columba's for their kindness and hospitality shown to our boys.
- 8th. First day of class. There were several new faces, especially among the smaller boys.
- 9th. We had our first pre-monsoon shower today. Little did we know that the rain would go on almost unabated until the 9th of September.

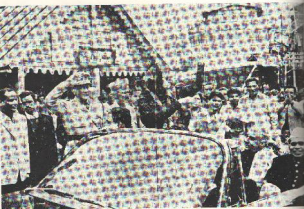
APRIL

- 7th. Easter Holidays start. A good number of boys went home for the Holidays.
- 14th. We had a terrible storm today. It lasted well into the night.
- 16th. Class nine went for their picnic to Kainchi today. They returned tired and weary. It was a longer walk than many of them had anticipated.
- 24th. Many of the picnic days had to be changed as the weather had also changed. We offer our sincere congratulations to all concerned for

the wonderful results in the I.S.C. Examinations. There were 27 "firsts"; 8 "seconds"; 1 "third" and no failures.

MAY

- 4th. Dr. Duff left for his holidays in Ireland. We hope he will have a good rest and favourable weather.
- 12th. For the past week it was sun, rain and hail almost every day. Some of the Brothers who came up from the plains for their holidays are feeling the cold.
- 17th. His Excellency Rt. Rev. Dr. Angelo Fernandez, Archbishop Delhi, arrived today for a holiday. The Prime Minister Mrs. Indira Gandhi and Mr. K.C. Pant, the State Minister for Home Affairs, arrived today. They were given a unanimous welcome by the students and citizens of Nalai Tal.



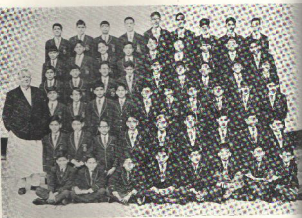


Mr. K. C. Pant along with Mrs. Indira Gandhi and
Mr. Kamla Patil Tripathi standing below the statue of his father,
Mr. G. B. Pant, former Home Minister of India and
Chief Minister of U. P.



- 21st. St. Mary's Convent Sports. Let us hope St. Joseph's will have a better day tomorrow.
- 22nd. A perfect day for Sports. There was not a cloud in the sky. His Excellency, Dr. B. Gopala Reddi, Governor of U.P., very kindly presided and Smt. Reddi gave away the prizes. We should like to say "Thank you very much" to both Smt. & Dr. Reddi for their

Class VIII



(L to R)

- Back Row :* S. Singh, N. Hardey, P. Gurl, M. Sen, A. Chakrav, A. Kumar, A. Sah,
M. Bhattacharya, S. Irani.
- 5th Row :* H. Kishore, V. Pigeiroda, S. Pandey, A. Vohra, S. Shuk, G. Wanchuk,
A. Mathan, T. Bashir, K. Singh.
- 4th Row :* L. D'Souza, C. Karkar, R. Andrade, S. Tanogi, G. Lima Leite, J. Ernst,
A. Shuk, S. Kumar, A. Melimura.
- 3rd Row :* Ben C. A. O'Shea, A. Mastogi, K. Sah, P. K. Ahmed, A. Srivastava, S. Aloni,
R. Manjappa, V. Suresh, S. Kathar, G. Savana, N. Tondra.
- 2nd Row :* W. Goncalves, K. Mahajan, A. Chandra, N. K. Khori, S. Nalla, A. Mehta,
A. Sah, P. Singh, V. Pandey.
- 1st Row :* J. Negi, A. Sah, E. Pinto, N. Gardia, A. Bhalla, S. Tiku, V. Shuk,
S. Joshi.

readiness to preside at any function at St. Joseph's even at a short notice.

- 23rd. Another beautiful day. A second number of boys have gone on local leave. We hope they will have good weather for their holidays.
- 24th. The fine weather did not last long as we had a thunder storm this evening.
- 27th. Some boys went to Sherwood for their fete.
- 30th. The catholic boys from class eight upwards start their retreat. Rev. Fr. Castellino, C.S.S.R., preached to them.

JUNE

- 2nd. Rev. Frs. Castellino and D'Souza leave for St. Mary's Convent where they will give the girls their retreat.
- 4th. The Archbishop and some of the Brothers went to the Observatory this evening. Mr. Joshi who was in charge at the time showed them the various parts of the observatory and the other members of his staff and himself did everything to make this trip to the observatory not only instructive but also enjoyable.
- 27th. Feast of Our Lady of Perpetual Help. Four boys received their Holy Communion at a Mass celebrated by His Grace Most Rev. Dr. Angelo Fernandez.

JULY

- 1st. Tree Planting Day. Inspite of the inclement weather class nine braved the elements and went along to plant the young trees. It was a cold wet evening and the spot chosen was equally inhospitable.
- 16th. Br. Duff returned from his holidays looking well.

AUGUST

- 5th. The Scouts organised a fete this afternoon.
- 10th. Our Juveniles B team won their first round in the Football Tournament.
- 15th. Special prayers followed by the flag hoisting ceremony took place

in the morning. The usual Independence Day Cup final was held on the Flats.

- 24th. There is great excitement over the Cricket Test. Our heartiest congratulations to the Indian team for their wonderful victory.

SEPTEMBER

- 1st. Table Tennis Tournament is in full swing.
- 4th. Finals of the Table Tennis. Mr. C.L. Sah Thulgharia, Secretary, Naini Tal Table Tennis Association, presided and gave away the Certificates. We were glad to see Mother Josephine and the Senior girls of St. Mary's present.



Mr. C. L. Sah Thulgharia, Secretary, Naini Tal Table Tennis Association, speaks to the competitors before giving away the certificates of merit.

- 5th. Teachers' Day.
- 8th. The Inspector—Mr. R.C. Tewari examined the school.
- 9th. Notwithstanding the inclement weather Mr. Tewari came again today. He had an informal talk with the teachers this morning.

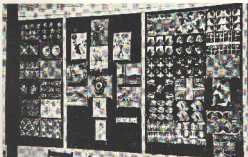
- 12th. We are trying to put in some practice for the swimming meet between showers.
- 16th. The Aquatic Meet was held today. Mr. H. Krishna presided. We got a pleasant surprise by the arrival of Bas. Duff and Foley. They are both most welcome.
- 23rd. J.S. Randhawa, N. Rodericks and G. Goncalves left this evening for Jhansi along with some boys from Sainik School, Ghorakhal, to represent Naini Tal District in the Table Tennis.
- 25th. There was a great exodus of boys for the Puja holidays.
- 28th. The Bishop elect of Lucknow, Rt. Rev. Monsignor Cecil deSa along with Frs. D'Souza, Fulgentius and Lobo paid us a visit this evening. The boys, who were back in school, formed a guard of honour for the Bishop-elect and his priests.
- 29th. A concelebrated Mass at which Mons. Cecil deSa officiated along with Frs. D'Souza, Fulgentius, Lobo and Hyacinth was celebrated in the College Chapel this morning.
- 30th. Br. O'Sullivan brought up some boys from St. Columbo's to play our boys in Tennis.

OCTOBER

- 1st. The weather is favourable for the Tennis Tournament. A number of our regular Tennis players had gone on local leave and were not able to get back in time to witness the contest between the two schools.
- 2nd. N. Rodericks and G. Goncalves returned from Jhansi. They won the District Table Tennis Championship.
Gandhi Jayanti was celebrated today.
- 3rd. Rev. Fr. Hyacinth opened the Art and Craft Exhibition this morning. Mr. & Mrs. Tahir deserve great credit for the exhibition.
- 16th. Most of the boys of the Senior School went to see "Airport" at the Capitol this morning. We learned later in the day that Satyendra Singh Bisht was stabbed in the bazaar the previous evening and died in the early hours of the following morning. Our deepest sympathy goes out to his mother, sisters and brothers.



Some of the Art Exhibits.



- 13th. Class nine celebrates Br. Duff's Feast day.
 15th. The inter-class boat race was held this evening. In the Senior Section the I.S.C. Class "A" team won while in the Junior Section class eight won. Mr. K.C. Pant unveiled the statue of Mahatma Gandhi near the bus station this evening.
 16th. Some photographs for the Review were taken today.
 17th. This is a real winter's day with sleet, hail and wind.



Mr. K.C. Pant, State Minister for Home Affairs and past pupil of St. Joseph's, unveils the statue of Mahatma Gandhi at the bus station, Naini Tal.
By Mr. K.C. Pant's side is Mr. K.S. Taragi, Chairman, Municipal Board.

- 20th. Several boys have got coughs and colds.
24th. The weather has been exceptionally wet and cold for the past week.

NOVEMBER

- 11th. The Junior boys started their examinations today.
13th. Some of the small boys' boxes are sent off this morning.
19th. Junior School party left today.
24th. Middle School examinations start today.

DECEMBER

- 3rd. School closes for winter vacation.

Old Boys' Section 1971

At various times during 1971, many past pupils wrote either for copies of the Review or for some news of the College. We, here in St. Joseph's, are happy to hear from those past pupils and to learn that they are living up to the ideals that were placed before them in their days at St. Joseph's.

Noel Nyes was awarded the Ph.D. Degree in Chemistry at the annual convocation of the Indian Institute of Technology, Kharagpur on January 6th. This high honour, Noel says, was mainly due to the wonderful grounding he received during his school years at St. Joseph's College, Naiini Tal, from where he passed his Senior Cambridge in the First Division with Distinction in English, Geography, Mathematics and Chemistry. Of the 658 degree winners at the convocation from the B.Sc. to the Ph.D. there were only 36 Ph.D.'s of whom Noel was the only Anglo-Indian. After school, Noel joined St. Xavier's College, Calcutta, and having got his B.Sc. (Chemistry Honours) was admitted to the Institute of Technology Kharagpur for his M.Sc. (Chemistry) after a competitive examination. He was awarded

his M.Sc. degree in Chemistry in April 1968, with 63.8%. This inspired him to go for the degree of Doctor of Philosophy in Chemistry. He was offered employment by many organisations but Noel was determined to gain his doctorate first.

He says that he owes everything to Dr. Bisant G. Chatterjee, his professor for his M.Sc. and research guide for the Ph.D. Noel is now attached to Depenning and Depenning. He is the second son of Mr. Ferol A. Nyes the well-known photographer. His elder brother Roger who also received his education at St. Joseph's is Assistant Manager of Amgooric Tea Estate, Assam.

S. R. Ghosh (I. S. C. 1969) sent the following account:



After doing my I. S. C. from Sem in 1969, I joined the Local

D.S.B. Degree College in the intermediate class. At the same time I appeared for the N.D.A. examination. On being selected for the N.D.A. I left this College and joined the Academy in 1971. I like the life here although it is tough at times. At the same time I miss Sem very much and often I think of the ten memorable years I spent there. My brother Shanker (I.S.C. 1966) is doing well at the I.M.A. Dehra Dun. There are several other Ex-Sem boys at the academy. There are S Kumar—I.S.C. 1969; M. Joshi, S. Naravane, V. Mehra, N. Jain and Ajai Singh—all I.S.C. 1968, M. Muttu, L. Mehra—I.S.C. 1967 and H.S. Sandhu I.S.C. 1966 passed out in June 1971. Another Ex-Sem boy Dinesh Narayan who did his Intermediate Science from Sem in 1957 is now Captain and is at present a Divisional Officer in the N.D.A. All the Sem boys are doing very well.

Ashok Daftary M.B., B.S. (I.S.C. '60) writes "I am now just a year away from my M.D. degree in Pharmacology. I have almost completed my thesis on the protective abilities of a series of drugs against experimentally poisoned livers and I have my written and oral exam next year. I have passed a qualifying examination which would allow

me to participate in hospital practice in the U.S.A. and am at present negotiating with several medical schools in the U.S.A. for a placement. I intend leaving for the U.S.A. in the middle of next year. I would like to specialise in Clinical Pharmacology i.e. the valuation of drug effects on man and a determination of the mechanism of these effects on the human organism". Ashok is engaged to a girl who will also be doing her M.Sc. in Cell Biology about the same time as he will be doing his M.D. degree. They plan to get married immediately after their degrees and then go to America for further studies. His brother Dickie has obtained his Master's Degree in business Management in the U.S.A. He is doing very well as a management consultant with New York Metropolitan Life Insurance Corporation. He has been away from India for over three years and is planning a holiday soon in India.

Flt. Lt. Vijay A. Roderigues (I.S.C. '60) "It has been a big time since I left that school that has done so much for me... I managed to meet a number of the boys from our school and on an average, I will say that we have kept the flag flying. There have been exceptions but that is inevitable. Hanzel Collner is

in Vienna. Ralph and Ronnie Glover are with the R.A.F. in the U.K. Balakrishnan is a senior accountant with a bank in Bombay. "yours truly" is a pilot with the Indian Air Force" "I got engaged on Easter Sunday — my fiance is now away in London on a posting and will be back early in July. The big day is set for February 19th 1972 please God."

"It was good to hear that St. Paul's house fared quite well at last year's athletic meet. I represented my squadron last year in cricket, hockey and billiards. We won the hockey. I am the nation billiard champion and we were runners-up in cricket". Sam wishes both Vijay and Ashok the very best of luck in their new life.

Sanjay Banerji writes from the I.I.T. Roorkee that he is getting on well and is anxious to hear from any of his classboys who were in S.J.C. with him.

Hans Gollner wrote from Vienna. He is now in the Personal Department in the UNIDO and has great hopes of rising to be Executive Director in the next year or so. He got married on the 23rd July. They were married by the bride's Uncle who is a Jesuit, who was on his way to London at the time. The



Nuptial mass with the choir was most inspiring. We here in St. Joseph's wish the newly married couple the very best of luck.

Vikram Mehta (S.C. '64) has now got his Master's Degree in Business Administration. He has got several offers of jobs. He frequently meets Khara, V. Puri, Bilimoria and Nijhawan brothers in Chandigarh.

David R. Taylor who was in St. Joseph's from 1946 — 1952 writes "I left India in 1957 and joined R.A.F. in which I spent twelve years — three of which were in Germany. After being demobbed I decided to try teaching and am now in Wales Training College in my second year. My subjects are English and Drama

and of course Education. I am married and have two children—a girl Kim aged 5 and boy Carl aged 3. My father is still in India—he, too, was a product of the Irish Brothers". He sends his regards to all the Brothers and Staff member whom he knew.

Vikram Srivastava is doing his B.A. Final from Allahabad University. He sends his best wishes to all.

Hemant Merchant has passed his B.Sc. examination from Bombay

University in the First Division and also secured First in the University in Geology. He is eligible for a Govt. scholarship. He has applied for admission to the M.Sc. course with Geology.

Sailesh Doctor passed his B.E. (Electrical) examination from Poona University in the First class. He is now trying to go to Germany or the U.K. for practical training in Electrical Engineering.

Benild Pires sends his best wishes to all in St. Joseph's from Canada.



BEN, LARLA & KARL

C. Borthwick Writes from Bombay "I was a student of Sem from 1939 to 1937 when Br. McLoughlin was the Principal. After I left, I joined Calrex (India) and worked with them for nine years. I then switched over to Indian Oil where I am employed as a charginman (Maintenance). I am now married with two sons whose ages are four and three. I hope to be able to send

them to Sem when they are a little older."

Vijay Sharma is now in his final year of Dental Surgery at K.G. Medical College, Lucknow.

Qamar Rehmani sends his best wishes to all in St. Joseph's from I.I.T. Kanpur where himself and four of his classboys are doing well.



Anwar Ali is doing his M. Tech at I.I.T. Kanpur. He writes that "While recently in Delhi, I met Akshobh Singh and Nipi Kochar in Delhi University. H. Qurashi and Manoj Joshi are in St. Stephen's while Rajiv Kumar, K. Bindra and Manoj Joshi are

also here in the fifth and final year at this institute.

Michael Perry is now doing his 2nd year Engineering at Victoria University. He was originally on a Commonwealth University Scholarship but he had to give it up

Class VII A



(L. to R.)

Front Row: P. Bhatt, E. Lingo Lallan, K. Adani, A. Vaz, N. Kapadia, S. Shinde,
B. Gowl, S. Roy Chowdhury.

2nd Row: J. Patrao, A. Sahai, K. Gowl, S. Deyal, L. Manojkumar, A. Karki,
Z. Merchant, K. Chopra, A. Kapur.

3rd Row: S. Khosla, P. Jindal, P. Jagati, P. Jangraji, C. Gillen, N. Mehta,
S. Manchani, R. Mohan.

Back Row: H. Chavhan, V. Nayyar, S. Dhaswan, R. Marini, B. Alreja, A. Dhaswan,
D. Gaudin, B. Bhattacharya.

Class Teacher: Mr. T. A. Comber.

as he got a Cadetship with the Australian Public Service. Mr. Perry's house is a meeting place for several past pupils of St. Joseph's. Many other boys from the Brothers' Schools in India also call there. **Rennie Doutre** is a frequent visitor. He is doing well and is on the hockey team of a local team. **Gilbert** is still at College and is doing well in his games and athletics. Michael plays hockey with the university which he is attending.

Noel and Des Kelly who were in St. Joseph's from 1942 to 1948 are also in Australia. After leaving St. Joseph's, they went to the University in Australia. Des is with a Commonwealth Engineering Firm while Noel has his own Consulting Engineering Business.

Gordon Lewis writes from Bombay. "After leaving Sem in 1960, I joined the Bengal Chamber of Commerce and Industry. Finding prospects better in Bombay I came here and am now working with Bombay Chamber of Commerce. I was married in 1968. My mother, who was a nurse in Ramsay Hospital is also with us. We have a baby girl since January 17th this year. My brother **Keith** also an old Sem boy has been awarded *Pava Srna Medal* for outstanding bravery, skill and except-

tional leadership. The President, Mr. V.V. Giri, presented him with the medal at a special Investiture. Keith is now a Squadron Leader in the Air Force and should be getting his promotion to Wing Commander shortly.

Ranjan Roy (S.C. '62) called to St. Joseph's along with his wife early in August this year. After leaving St. Joseph's he did his B.Sc. and later his M.Sc. He is now working at his Ph.D. in Mathematics at Stony Brook, New York. He hopes to visit St. Joseph's at a later date.

Digbijaya Rana is now in his 1st year M.D.,B.S. in the All India Institute of Medical Sciences, New Delhi. He passed his Intermediate Science last January in Kathmandu and was selected by His Majesty's Govt. of Nepal in the Colombo Plan Scholarship. **Milan Joshi** is also there but is one year ahead of Digbijaya. He often meets **N. Behal, R. Kapoor, Taragi, Kohli, and S. Soni**. The latter has since gone to Canada for higher studies.

The Figueiredo Brothers. **George** writes "I left St. Joseph's stricken with fear of facing the outside world, but here I am still going strong. After some time I went to



St. Xavier's Technical Institute of Engineering, Bombay where I received my Radio and T.V. Services Certificate. I am at present doing a full time correspondence course with an Electronic Engineering College, Washington. I will probably go on to Canada to my two brothers later."

Rui returned from Canada in May for a holiday at Dhulian. During his holidays he worked at the Aramen International—I.R.M. as a "Summer student" trainee for which he was paid as well as given a course in Computer Maths. He hopes to become a Computer Engineer. He has returned to Canada and taken Charles along with him. Charles left St. Joseph's in December '70 and immediately started work at the Aramo clinic for a period of three months. Charles is now doing his Pre-University and then goes on for Medicine. He hopes to become a Neuro Surgeon and has ambitions of doing the first brain transplant. Both Rui and Charles are attending the same college—St. Michael's College, University of Toronto.

K.K. Das who was in St. Joseph's from 1963 to 1965 while his grandfather was Governor of U.P. writes "After leaving St. Joseph's, I went to Colvin College, Lucknow. I am now doing my B.A. in Poona

and shall get my degree in December '71, after which I plan to do my LL.B. Last Sunday I visited the N.D.A. where I met **Nirbhay Jain, Vivek Mehta** and **Surendra Kumar**. We spent the whole day talking of our days in Sem. I hope to visit the place some day soon and meet all the members of the Staff.

Sushil Mishra was also in St. Joseph's from 1960 to 1962. He's now attending **Rajendra Medical College, Ranchi**. He sends his best wishes to all the teachers who were at St. Joseph's in those days.

Vijay Kapoor is studying at **Milwaukee University U.S.A.** for his M.B.A. He says that the competition is really hard and only the very best are kept at the University. He may be able to visit India some time in 1972.

William Wallace is in St. Edmund's, **Shillong**, doing his B.Sc.

John Farrell is doing wonderfully in the computer industry in **Sydney** and **Melbourne**.

Allen de Noronha who was in St. Joseph's from 1958 to 1965 when he did his Senior Cambridge, took over his father's business after leaving school. He is longing to visit his old school once again. In addition

to his other work he is very active in Church work. He is the Secretary of the Senior Praesidium of the Legion of Mary and also of the Kanpur Curia Extension Committee. He has been appointed to the Editorial Board of "Catholicus" recently.

Ajit Thakur ('62) is working with **Union Carbide India Ltd.** He joined I.I.T. Kanpur in 1966 and graduated in May this year in the top 5% of his batch with honours. While at the I.I.T. he received the Institute Merit Scholarship and won many Departmental Awards.

Manoj Joshi (S.C. '65) very kindly sent me the following account of himself and some more of the past pupils of Sem whom he has met. "After leaving Sem I did my Intermediate Science from Degree College, **Naini Tal** and in July '67 I joined the I.I.T. Kanpur. After Sem and Degree College, the environment at Kanpur was very different, both academically and climatically. At first I found it quite difficult to adapt myself to the new teaching methods but guided by some seniors I managed to overcome the problems facing me and I am glad to be able to say that my performance so far has been good enough to win the award of the National Merit Scholarship for the five years of my stay here. I am now in the Final Year and will be passing

out in May '72. A number of old friends from Sem have either passed out or gained admission into I.I.T. during the five years that I have been here. Soon after my arrival here I met A. S. Gill (S.C. '63) and very shortly afterwards Rajiv Kumar, G.S. Bindra (both S.C. '63) R. Laroia (S.C. '66), Ajit Thakur (S.C. '63), Rajiv Sahay and A. Ali (S.C. '66). All these except Laroia who is in the final year Mechanical Engineering and Ali now completing his Masters Degree in Metallurgical Engineering, have left. A.S. Gill went to the U.S.A. for his M.S. and returned some time back. A big number of ex-Sem students are also now in the Junior years. Riptapan Singh (IV yr E) has become an excellent basket ball player. A. Sudan, Mousie Gupta (S.C. '67), Q. Rehmani, S. Gulati, Bisht (S.C. '68-69) and Sharma are all here. A number of ex-Ramnee Girls called here recently and we had a great get-together. There is little more that I can add except that I have continued to play Cricket. The coaching that I got at St. Joseph's has stood me in good stead and I have been in the 1st eleven of the Institute's Cricket team for the past three years".

Patrick Cantwell writes regularly. He wishes to be remembered

to his class boys who are scattered all over the world. He hopes to get off to the United States early in 1972. His Brother Harry would love to return once again to India and re-live the scenes of his youthful days.

Sunil Singhal very kindly sent a copy of the D.M.E.T. prospectus in the hope that some of the boys when they have finished the Indian School Certificate would join it. Both Ravi Tandon and himself sat for the D.M.E.T. Examination. Ravi has gone to the Calcutta branch after he has completed three years in Bombay. Cecil D'Cruz is also at the D.M.E.T. Sudhir Singhal has completed his Economics Honours and is now helping his father.

In a long and most interesting letter Derek Soares bring us up to date with some of ex-Sem boys in Bombay. "Geoffrey got a 9 agg. in his I.S.C. Examination and is now in the I.I.T. Bombay doing Chemical Engineering. He got an All India rank of 111th and 42nd in W. India.

Alban Pereira has just sat for the Duffelin. Laurie is doing Inter Science in Wilson College. S. Gutt and Rajani are both in I.I.T. A Number of my classmates are in the N.D.A. among whom may be mentioned Ajay Singh, Vivek Mehta, S. Naravane, N. Jain, M.K. Joshi

and S. Kumar. S. Biswas is also here with me in the D.M.E.T. H. Lampury is in Secunderabad and F. D'Sa is doing his arts in St. Xavier's. As for myself I have been made a Cadet Captain and got 1st prize in the Technical Paper reading, and in the National Maritime Day Model Making competition I got 1st prize. In the 2nd year I was in the hostel Entertainment Committee and we were able to organise plays, socials and concerts. In this way we all kept together and formed a wonderful unit. There are marvellous openings for the boys here at the D.M.E.T. and it is a great pity that more boys from St. Joseph's do not join it. The entrance examination is held all over India and several boys from Delhi join it. The D.M.E.T. course is recognised in certain universities in the U.S.A. and there is great scope for further studies from which a person can branch off to other activities and courses besides Marine Engineering". I hope the boys in the I.S.C. class are working hard. Please give them all my best wishes.

Atul Dar writes "I graduated with pretty good results. I was

and in College. I am now doing M.A. Economics at Delhi School of Economics, which is probably one of the finest of its kind. My brother Vivek is doing 2nd year Economics at Shree Ram College. Donald Francis is in Canada and D. Phillips is in Australia. M Muttu has passed out from the N.D.A. and is now in Hyderabad for his Air-Force training. Riptapan Singh has gone back to the I.I.T. Kanpur. Mukul Joshi is in my class and R. Kapoor is here also".

Ashok Agarwal has just written trying to get his two cousins into St. Joseph's. He did his Senior Cambridge with brother Vijay in 1960. He went to Calcutta then where he graduated in 1964. In 1965 he went to the U.K. for his Chartered Accountancy and four years later was a fully qualified Chartered Accountant. He is now back in India and working in Bombay for the past two years. Vijay is a trainee in Germany while Satish is studying for his M.Sc. in California.

With this we close the account of our old boys for 1971.

Jai Singh Bora

He joined the staff here as Head Clerk in March 1921 and held that post till 1966. For the past five years he has been Personal Assistant to the Principal.

He has worked under thirteen Principals and six Provincial Superiors, covering a period of more than fifty-one years. This is indeed a record to be proud of.



Mr. J. S. Bora who has completed fifty-one years of loyal service at St. Joseph's College and is still going strong.

In Memoriam

The Editor, Staff and students offer their sincerest condolences to the parents, brothers and sisters of Satyendra Singh Bisht (S.C. 62), known as "Sweetie", who was stabbed on Saturday the 9th of October and succumbed in the early hours of Sunday morning. Satyendra was the last of the Bisht brothers to do his Senior Cambridge from St. Joseph's. He was always loyal to his old school and often came up for cricket or table tennis. After his Senior Cambridge he took his B.A. and finally his Master's degree in Arts from The Degree College, Naini Tal, and at the time of his death he was a research student. He was well-known and respected by all for his gentle manner and upright behaviour.

Allan Pinto (S.C. '62) also passed to his eternal reward in Bombay as a result of an accident. He had got a new assignment on a German Ship with a salary of Rs. 1370/- per month and the world seemed bright for him when death claimed him for its own.

May their dear souls rest in peace of Christ for this is what they deserve as they were both excellent young men.

Prize Holders 1971

<i>Class</i>	<i>Proficiency</i>	<i>Morals</i>	<i>Catechism</i>
I	1. Inderpreet S. Bhasin 2. Pradeep Pande 3. Peter Smotacek	Inderpreet S. Bhasin	Collin Rodericks
II	1. P. Tshering 2. H. Pant 3. K. Thapar	S. Srivastava	Noele Minquinta
III A	1. Lyndon Roderigos 2. Rajeet Varma 3. Brendon Machado	Suhel Seth	Brendon Machado
III B	1. Sanjay Nihalini 2. Sanjay Shah 3. Gyaneshwar Sarin	Pradeep Joshi	
IV A	1. Noel Castellino 2. Dev Sarwal 3. Darryl Nunes	Sanjay Rautela	Noel Castellino
IV B	1. Sanjay Mukerji 2. Jitendra Rawat 3. Arul Bhatnagar	Sanjay Mukerjee	
V A	1. Balaji Prasad 2. Smil Sahai 3. Karan Singh	Sudhir Bhatia	
V B	1. Ranjit Shenoy 2. Naresh Malhotra 3. Mark Castellino	Naresh Malhotra	Ranjit Shenoy
VI A	1. Sanjeev Seth 2. Sanjay Kumar 3. Vivek Makar	Vivek Makar	Michael King

<i>Class</i>	<i>Proficiency</i>	<i>Morals</i>	<i>Catechism</i>
IV B	1. Ajay Avasthi 2. Sanjay Pant 3. Dharendra Rawat	Anurag Bamhi	
VII A	1. Ravi Mehra 2. Pankaj Batra 3. Vinod Nayyar	Promod Jindal	Lyndon Mascarenhas
VIII B	1. Kamchan Pande 2. Arun Joshi 3. K. Mayaram	Nirmal Joshi	
VIII	1. G.P. Saxena 2. M.S. Bhandari 3. A. Bhatia	Hari Raj Kishore	V. Figueredo
IX	1. A. Pandey 2. S. Kalra 3. A. Khanna	R.P.S. Bisht	M. Pinto
X	1. A. Mehra 2. A. Karli 3. H.V. Chopra		A. Goncalves
XI	1. N. Seth 2. S.K. Jain 3. P. deSouza	V. Joshi	I. Rodericks & P. deSouza

Art and Craft

R. Marini—First

D. Bhattacharya—Second

Science (Junior)

S. Kalra

Science (Senior)

V. Joshi

Boating (Senior)

Class XI "A" Team

Boating (Junior)

Class VIII Team

Inter-House

St. Peter's

Indoor Games (Seniors)

Chess

H.V. Chopra

Draughts

H.V. Chopra

Carroms

Chhimi Wangchuk

Indoor Games (Juniors)

Chess

R. Marini

Draughts

Harvinder Singh

Carroms

Prakash Jangpangi

Hindi (Higher)

Senior Section

Sunil Kumar Jain

Middle Section

Sanjay Joshi

Junior Section

A. Mehta

Hindi (Lower)

N.S. Mahara

Special Prize (presented by Miss V. Sadi)

S. Chatterji

S. Sharda

Class VII B



(L to R)

1st Row : A. Joshi, N. Joshi, R. Agarwal, H. Pawar, K. Parde, G. Doshi, S. Dori,
B. Sachdev, K. Mayasani, A. Khatri, K. Shah.

2nd Row : Dr. E. H. Lyng, R. L. Shah, B. B. S. Pat, G. Tamas, Garbir Singh,
A. Traori, Harvinder Singh, Harvinder Singh, Gurbachan Singh, R.K. Singh,
S. M. Seth, T. Ahmed.

3rd Row : S. Updya, V. K. Singh, G. Sandhu, S. Parnal, P.S. Gill, S. K. Jala,
K. Goleti.

Table Tennis

1st Table

<i>Singles</i>	Neil Rodericks
<i>Doubles</i>	G. Gonsalves & J. Randhawa

2nd Table

<i>Singles</i>	R. Kumar
<i>Doubles</i>	R. Kumar & A. Mehrotra

3rd Table

<i>Singles</i>	W. Chimmi
<i>Doubles</i>	S. Kakar & S. Tikku

4th Table

<i>Singles</i>	L. Mascarenhas
<i>Doubles</i>	L. Mascarenhas & S. Suri

5th Table

<i>Singles</i>	M. King
<i>Doubles</i>	M. King & D. Conquest

Football	} St. Peter's
Hockey	
Cricket	

Cock-House : St. Peter's

Runners Up : St. Francis'

Our Donors 1971

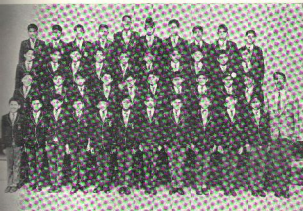
The Principal, and the Sports' Committee have much pleasure in recording their sincere thanks for the generous donations given by the following parents, and also to those who elected to remain anonymous :

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| 1. Capt. G.S. Grewal | 30. Wg Cdr J.K. Seth |
| 2. Dr N.M. Seth | 31. Mr F.Pinto do Rosario |
| 3. Mrs D.R. Mehra | 32. Mr B.D. Sharma |
| 4. Mrs M. Jacobs | 33. Mr N. Roy Choudhury |
| 5. Dr J.V. Figueiredo | 34. Mr S.C.S. Master |
| 6. Mr J.S. Bhandari | 35. Mr S.S. Kochak |
| 7. Dr J.D. Sharma | 36. Mrs R.K. Narpat Singh |
| 8. Mr S. Engineer | 37. Mrs S.S. Darnwal |
| 9. Dr L. Joshi | 38. Mrs D.T. Todd |
| 10. Mr C.S. Jain | 39. Dr H.P. Chakravarty |
| 11. Col. R.L. Puri | 40. Mr B.M. Pant |
| 12. Mrs S. Dayal | 41. Mr D.N. Vaishnava |
| 13. Mr B.J. Irani | 42. Mrs E. King |
| 14. Mr M. Nath | 43. Mrs K.S. Ghandhi |
| 15. Mr B.C. deSouza | 44. Mrs S. Ghandhi |
| 16. Mr H.K. Singh | 45. Capt. A.H. Jeddy |
| 17. Mr J.K. Seth | 46. Maj. Sarat Singh |
| 18. Mrs K. Pant | 47. Mr L.F. Pereira |
| 19. Mr J.L. Bagrodhi | 48. Mr V. Vithaldas |
| 20. Mr J.K. Agarwal | 49. Mrs N. Misquitta |
| 21. Lt. Col. U.C. Chopra | 50. Col. I.S. Karki |
| 22. Mr O.M. Var | 51. Mr D.P. Sarwal |
| 23. Mr. R.S. Gujral | 52. Mrs K.S. Awasthi |
| 24. Mrs A.R. Shrivast | 53. Mr A.J. Rodericks |
| 25. Mrs G.S. Pal | 54. Mr L.J.P. Andrade |
| 26. Dr Nawal Kishore | 55. Mr Joginder Singh |
| 27. Mr Ratan Lal Sah | 56. Mr K.A. Tikku |
| 28. Mr K.L. Dua | 57. Dr K. Sahalakar |
| 29. Mr Madhava Prasad | 58. Mr T.M. Nunes |

- 59. Mr S.S. Chauhan
- 60. Mrs S. Smetacek
- 61. Dr Khazanchand
- 62. Mrs T.M. D'Souza
- 63. Mrs M. Dunne
- 64. Mr D.D. Suri
- 65. Mrs M. Khalakdina
- 66. Capt. P.G. Bhatnagar
- 67. Mr B.B. Soni
- 68. Brig. E.T. Sen
- 69. Mr Kazi A. Karim
- 70. Mrs M. deSouza

- 71. Mr A.N. Dhavan
- 72. Mr V.R. Gandhi
- 73. Mr K.K. Agarwal
- 74. Mr A.S. Nalwa
- 75. Brig. M.M. Chhabra
- 76. Mr T.K. Sen
- 77. Mrs T. Pinto
- 78. Mr S.K. Gupta
- 79. Mrs J. Rocha
- 80. Mr H.C.S. Jagati
- 81. Mr J. Monteiro
- 82. Mr H.S. Thapar

Class VI A



(L to R)

1st Row : A. Mohanta, R. Saha, V. Muker, S. Kumar, H. Singh, M. Perin,
S. Tokrasai, S. Agarwal, P. Dattani, A. Joddy, L.V. Manchari, Mr. Keshor.

2nd Row : M. King, M. Jodhi, B. Bhattacharya, S. Shrivastava, S. Pandey, R. Chopra,
M. Kumar, S. Chandra, S. Bhattacharya, N. Pignatelli.

3rd Row : S. Lakshmi, A. Sharma, A. Chopra, D. Choudhary, R.K. Gupta, N. Gandhi,
S. Singh, R. P. Saxena, N. Sharma, T.A. Nandini.

4th Row : S. K. Mongia, B. Bagrodia, B. S. Das, S. Seth, A. U. Siddiqui, S. P. Singh,
G. Tammara, A. V. Singh, A. K. Agarwal, D. Goudas.

Class VI B



(L. to R.)

Standing : A. Qadri, M. Bhatti, V. Upreti, D. Bhakta,

2nd Row : S. Pant, V. Pandey, T. S. Nona, L. Khana, M. Joshi, A. Anandhi,

3rd Row : D. Rawat, M. Bajaj, V. Mishra, S. Gupta, V. Varma, D. Mishra, R. Sah,

4th Row : P. Joshi, V. Singh, A. Duttani, S. Aiyar, Mr. J. Lohare, A. Dahanu,

Absent : B. Joshi, K. Pandey.

Class V A



(L. to R.)

1st Row : R. Shah, B. Chakravarti, A. Kapoor, A. Mehta, P. Upadhyay, Mrs. S. Hingorani,
S. Agarwal, S. Bhattacharya, S. Bakshi, J. L. Saha, M. Shah

2nd Row : P. Singh, K. Nanda, A.K. Bhatia, R. Singh, R. Nanda, R. Sahai, M. Saxena,
S.P. Kumar, P.B. Rana, R.J. Singh

3rd Row : P. Gupta, D. Datta, A. Misra, K. Singh, A. Puri, R. A.R., A. Vaidyanathan,
H. Gupta, A. Bhattacharya, R. Khosla, S. Prasad A.K.

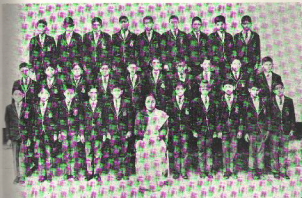
Class VB



(L to R)

- 1st Row : T. Sharmaji, O. Var, K. Pandey, M. Sah, P. Saurav, Mr. M.P. Mondiya,
A. Joshi, A. Shah, A. Joshi, A. Dhandiyal, B. Pandey.
- 2nd Row : K. Mallhotra, B. Lina, V. Joshi, P. Chopra, R. Reddi, V.S. Nabra, A. Sah,
A. Ahmad, A. Wilson, M. Montain.
- 3rd Row : T. Singh, R. Shetty, S. Verma, K. Chavla, B. D'Souza, V. Sah, M. Gadhilkar,
R. Anurad, A. Singh.
- 4th Row : A. Singh, J. Nalappura, M. Anwar, R. Saran.

Class IV A



(L to R)

Front Row : S. Chatterjee, S. Singh, B. Khatu, N. Chatterjee, T. Banerjee, Mrs. G.P.C. Lal, P.R.E. Das, D. Singh, D. Sen, L. Kundigant, L.Z. Behman.

2nd Row : V. Varma, D.R. Sena, S. Ghoshal, A. Mitra, S. Rastogi, S. Agarwal, D. Nandan, A. Verma, Y. Keshar, P. Datta.

3rd Row : M. Kumar, S. Khan, S. Abaya, T. Lal, R. Arora, A.S. Gilbert, S. Nandan, P. Jais, G.P. Nalhyappa.

Class IV B



(L to R)

1st Row : Miss S. Bhatt, D.S. Negi, S. Rastogi, S. Haque, A. Joshi, A. Kaurati,
N. Jain, D.S. Tarekh, J.N. Ramai, S. Mirkar.

2nd Row : S. Singh, R. Pandey, A. Pandey, P. Gurnani, A. Shah, A. Bhattacharya,
T. Paul, R. Kaur, M. Shrivastava.

3rd Row : P. Lalwani, V. Tarekh, V. Paul, P. Gupta, V. Mishra, S.K. Gupta,
S. Ahmad, S.K. Mishra.

4th Row : A. Pandey, U. Kapoor, P. Singh, M. Shafi, V. Paul, A. Sharma,
S. Mahapatra.

CONTENTS

Our Art drawing	99
How I missed the plane to Seoul	102
बेरा बरा	103
एक दुपेटना	106
अमन बिजु हूँभी अतिथिदिवस	107
विचार	108
Sem during 1971	109
Old Boys' Section 1971	118
Jai Singh Bora	128
In Memoriam	129
Prize Holders 1971	130
Our Donors 1971	134

Class III A



(L to R)

1st Row: A. Baez, N. Munguira, R. Kizama, J. Bustillo, S. Gupta, Mrs. P. Medley, E. Diaz, D. Navarro, A. Abraham, S. Seth, L. Rodriguez.

2nd Row: N. Goo, N. Keshor, D. Bera, N. Patais, R. Kizila, V. Marini, N. Miron, M. Morales, J. Rocha, S.M. Sahai.

3rd Row: R. Machado, S. Garg, T. Gool, R. Varma, A. Saona, A. Manonziom, E. Fabia, R. Malhotra, M.M. Singh.

Class III B



(L to R)

1st Row: A. Bhadwal, G. Bhadwal, P. Khare, T.L. Seth, S. Nigrali, M. Chandra,
S.C. Joshi, B.A. Singh, Miss I. Datta.

2nd Row: A. Jaisi, A. Upreti, B. Singh, M. Sengupta, G. Sethi, T. Joshi, S. Luthra,
O. Malhotra, S. Shah.

3rd Row: S.S. Kumar, V. Verma, S. Joshi, M. Pabla, Y. Shetty, S. Ahmed, J. Lian.

Absent: B. Chandra.

Class II



(L. to R.)

Front Row: K. Thapar, S. Tandon, S. Haqq, V. Nigpal, V. Rana, Mrs. J. Lefevre, N. Misquitta, S. Sah, A. Lefevre, N. Upadhi, P.S. Mathura.

2nd Row: D. Dhanraj, R. Mehta, M. Tandon, H. Singh, R. Sah, H. Pant, A. Sahai, A. Sah, P. Sah, G. Palash, S. Agarwal, C. Joshi.

3rd Row: S.K. Sah, S. Tondal, A. Chandra, V. Gupta, K. Chakraverty, R. Kumar, A. Misra, R.C. Bhargava, M. Singh, S. Dhanraj.

4th Row: P. Tharng, P. Kohn, S. Sah, S. Arora, R. Andrade, A. Senani, S. Srivastava, S. Sonu, A. Ahmed, A. Gera.

Class I



(T. to R.)

Front Row: U.S. Neel, P. Ganes, D. Joshi, A. Joshi, Miss J. deSouza, S. Sub, K. Pande, R.S. Desai, J. Lefort.

2nd Row: A. Pande, V. Nihalani, P. Pande, L.S. Hathi, R. Lunde, M.D. Saria, C. Boudicca, B. Shastri, B. Shah.

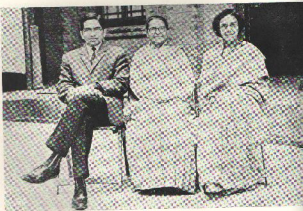
3rd Row: P. Shah, K.L. Sub, A. Singh, M. Prasad, R.P. Singh, M. Karim, M. Malik.

SISTERS OF ST. ANNE



Sr. Stella (Hospital Nurse), Sr. Lydia, Sr. Eugene, Sr. Michael.

HINDI TEACHERS



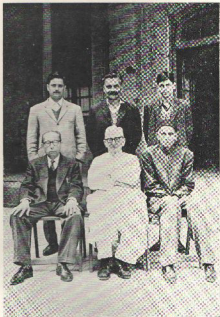
Mr. R. Chandra, Mrs. J. Masood, Miss V. Sod.

SCIENCE TEACHERS



Mr. S.C. Sah (Biology), Mr. H. Krishna (Physics), Mr. P.L. Sah (Chemistry).

OFFICE STAFF WITH MANAGER



Seated : Mr. B.A. Freitas (Manager), Rev. Br. Packenham,
Mr. J.S. Bora (P.A.)

Standing : Mr. J.P. Sah (Accountant), Mr. D.C. Sah (Secretary),
Mr. M. Joshi (Asst. Accountant).



Mrs. W. Gomes,
(Assistant to Class I Teacher)

Mrs. Y. Tahir,
(Art)

Mr. T.M. Syed,
(Art & Craft)

Mrs. F. Gomes
(Eng. Supervision)

CLASS MONITORS



(L to R)

Front Row : S. Shah (40), P. Gupta (42), R. Sah (40), S. Sahai (2A), A.K. Rajaji Prasad (2A),
S. Suri (70), K. Gupta (70), R. Shetty (22), Br. J.A. Hughes.

1st Row : A. Singh (5B), A. Pandey (5), A. Bhandi (6B), C. Gilbert (7A), S. Shah (8),
S. Seth (4A), B. Doshi (9).

2nd Row : H. Marini (2A), A. Mehra (10), A. Kumar (8), A. Chakravarti (8), A. Siddiqui (8A).

3rd Row : B. Nangia (10).

Dedication

His Lordship Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa

With Profound affection and loyalty we, the Staff and Students of St. Joseph's College, dedicate this edition of the College Review to his Excellency Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa, the newly appointed Bishop of Lucknow.

Teachers' Day 1971 at St. Joseph's

Everyone waited for Teachers' Day with great enthusiasm not only because it would be a holiday—unfortunately it fell on a Sunday—but also as they were eager to see the drama which had been prepared by the boys of the I.S.C. class in honour of the teachers. They were not kept waiting long. The day before a notice was sent round to the classes informing all that the next day's programme would start at 10 a.m. Punctually at 10 a.m., when every seat in the hall had been filled, the curtain was raised. Ian Rodericks of the I.S.C. class read a brief but appropriate message on the occasion. As he finished, the stage was lit up and this time the audience was treated to a Hindi play "Shadi Ki Baat"—a comedy in which S. Jain, K. Tandon, A. Nayal and A. Seth took part. This was followed by an English play "The Man in the Bowler Hat" in which S. Chatterji, N. Seth, S. Engineer, I. Rodericks, R.K. Singh, V. Agarwal and A. Jain—the director took part. The part of the play in which the Villian had to stick a knife into the shoulder of the hero seemed a bit too real for the more youthful section of the audience.

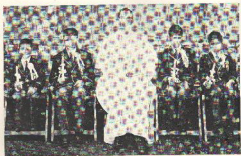
A few Hindi film songs were beautifully sung by K. Tandon, S. Jain and A. Nayal. These songs proved very popular with the audience who seemed most anxious for more of them. The musical talent in the class amazed most of us when L. Menzes thrilled us with a piano solo. R. Bashir, N. Seth, S. Chatterji, P. Kanwal and P. D'Souza were well received with their selections. They had styled themselves "Satan's Angels". Their group consisted of three guitarists, a drummer and some singers. They gave a few select pieces and left the audience in the right frame of mind—eager for more. The singing of the College Anthem brought the function to a fitting close. The evening was spent in watching a film because it became so wet that there was little else that could be done. With this small contribution we brought to an end an entertainment for those teachers, religious and secular, who have done so much for us.

S. K. Goel

I. S. C. Class

First Communions

The feast of our Lady of Perpetual Succour on June 27th was, as usual, a memorable day. This year it certainly was so for four little boys: Andre Lefevre, Neville Misquitta, Alyson Mascarenhas and Ravi Andrade. It was the long awaited occasion—their First Holy Communion Day.



(L. to R.): Andre Lefevre, Ravi Andrade, His Grace Most Rev. Angelo Fernandes, Archbishop of Delhi, Alyson Mascarenhas, Neville Misquitta.

They had been preparing for this great day, sacrificing their play time to learn prayers and catechism so that they could be in readiness for the solemn moment when God Himself would enter their hearts in the form of bread and wine.

This year there was present His Grace Most Reverend Angelo Fernandes, Archbishop of Delhi. He examined these youngsters and also celebrated the Sacrifice of Holy Mass, administering to them the Sacrament

of Holy Communion. The Sacristan had tastefully decorated the College Chapel with white lilies and greenery symbolic of the occasion.

At the solemn moment of Communion the little hearts of these boys must have certainly been close to God and united with their dear ones who could not be present.

After the service there was a lavish breakfast in the Brothers' Library. The four little boys were the centre of all attraction. Our Lord's words must have re-echoed in all of us elders that morning "Suffer the little children to come unto me for of such is the 'Kingdom of God'".

Julie de Souza.



(L. to R.), Andre Lefevre, Basil Andrade, His Grace Most Rev. Angelo Fernandes, Archbishop of Delhi, Aloys Maszardzes, Neville Minquitta with Miss Julie de Souza, Mr. & Mrs. Lefevre and family.

A Wonderful Achievement

"The results of the Essay Competition in English organised by the Central Bureau of Investigation on the subject "If I were a Policeman" have



VINEET JOSHI

been declared and we are glad to inform you that Master Vineet Joshi of class XI of St. Joseph's College has won the First Prize of Rupees five hundred only (Rs. 500.00). Please accept our heartiest congratulations on the success of your student in this nation-wide Contest." With these words the Assistant Director of the Central Bureau of Investigation, New-Delhi, informed us of Vineet's success in the All-India Essay Competition.

Vineet Joshi was presented a cheque of Rs. 500.00 by Sri Ram Krishna Dwivedi, Deputy Home Minister U.P., who had come to Naini Tal on the 2nd November 1971.

The Staff and students of St. Joseph's heartily congratulate Vineet Joshi on his outstanding success.



Shri R. K. Dwivedi, Deputy Home Minister U.P.
presented a cheque of Rs. 500/- to Vincet Joshi.

An Adieu

Julie de Souza bids farewell to St. Joseph's College, to the Principal, Rev. Br. Hughes, the Vice-Principal, Rev. Br. Burke, and the Rev. Bros. Pakenham, Duff, O'Shea, Comber, McGrath and Lyng, to the College Chaplain Rev. Fr. Hyacinth and the Sisters of St. Anne, to the secular members of the staff and all the other working members of this great establishment and also to the boys of St. Joseph's and the parents with whom she had contact in and out of Naini Tal.

She thanks them all for their kindness, cooperation and appreciation during her fifteen and a half years in St. Joseph's College. To her they have been years of wonderful experiences and opportunities for which she is very grateful.

Now she returns home to her parents in Kirkee. She carries away happy memories and trusts she leaves behind many friends. It will take her a long long time to forget Naini Tal and its people.

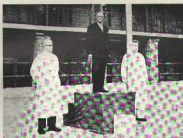
She begs to be remembered in their prayers and wishes one and all God's Blessings.

The Staff and pupils of St. Joseph's wish Miss J. deSouza the best of luck and thank her for all she has done over the past fifteen and a half years. Her work and worth cannot be measured by human standards but by the recording angel. Thanks and God bless you. — Editor.

We would also like to thank Mrs. Hingorani for her devoted service to St. Joseph's over the past three years and wish her every success in her new sphere of activity.

College Sports 1971

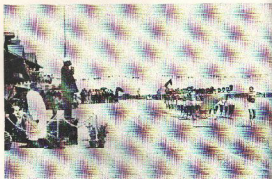
For almost a fortnight constant practice was put in by the boys of the College in preparation for Sports' Week. Inclement weather at times held up some of the practices. Sports' Week was declared opened on Thursday the 13th May by Shri Dewan Bahadur Daulat Rai who took the salute of the athletes as they marched round the arena with military precision behind their Home Flags. When the march past was over, the athletes stood to attention while Ian Rodericks read out the oath which all repeated. Shri Rai then declared the 84th Annual Athletic Meet open. He briefly addressed the athletes and stressed the importance of sports and discipline in their lives and encouraged all the competitors to strive hard not only at their sports but also at their studies. The speaker concluded his address by wishing them all the very best of luck during the coming Sports' week.



Dewan Bahadur Daulat Rai about to take the salute of the march past at the start of Sports' Week.

Various events were completed during the following Sports' Week. These included High Jump, Long Jump, Hop, Step and Jump, Shot Putt,

Discus throw, Hurdles, 400 metres and 800 metres in the different divisions. Sunday, May the sand shined bright and clear. Those who were in Naini Tal during the previous days must have had great doubts about the weather but the clear sky on this May morning dispelled their fears. As soon as possible after breakfast, boys and staff members could be seen making preparations on the field for the large attendance of parents, well-wishers and spectators who look forward to this event each year in Naini Tal. By noon everything was in ship shape and all were able to go for lunch and get ready for the sports which were to start soon. "Will the day hold out?" seemed to be the question most frequently asked. The brilliant sunshine and the peacocks' brooms added to the magnificent setting of this day's programme. Well before the time for starting the sports, crowds of people could be seen making their way up the steep slope to the college. His Excellency Dr. B. Gopala Reddi, Governor of our state of Uttar Pradesh, very kindly consented to preside while Smt. Reddi consented to distribute the prizes. His Excellency took the salute and for the next one and a half hours we were treated to a feast of



athletics which were run off with clock-work precision. It was most heartening to see how the athletes strove in the true spirit of competition to win points for their Houses. As His Excellency had to attend a function on the Flats, he had to leave at the conclusion of the athletic events but Smt. Reddi very kindly consented to stay and distribute the prizes. After an interval of



about twenty minutes, the Drill Display started. This included Seil Trepere, Tambourine Drill, Parallel Bars, Bunting Drill, Club Drill, Composite Drill and the Final Pyramids. Again in these as in the Sports events the same clock work precision was evidenced. At about 4.45 all the events in both sports and drills were finished and then the Final March took place. In this March Past the order of marching was the order in which the houses emerged as a result of the day's events. St. Francis' House led the march while St. Peter's House got a thunderous ovation for striving hard and never giving up hope. Smt. Reddi then gave out the prizes and while the various flags fluttered in the breeze we stood to attention for the National Anthem, played beautifully by the P.A.C. Band and then moved off with the thought on each one's lips — "a day's programme well accomplished". Congratulations, Staff and boys of St. Joseph's, and our thanks to the parents, benefactors and well wishers of St. Joseph's who honoured us with their presence here today.



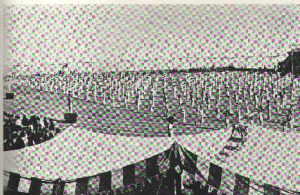
Mr. J.C. Joshi, Principal, C.R.S.T. College,
Nand Tal distributes the Prizes to the
winning teams on the First Field.

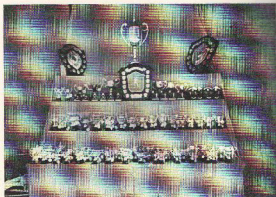
PRIZE WINNERS 1971

Events	First	Second	Third
High Jump	"A" J. Randhawa	W. Smetacek	N. Bishi
"	"B" J. Sandhu	N. Todd	N. Goel } Tie
"	"C" A. Gonsalves	P. Singh	P. D'Souza }
"	"D" A. Pande	R. Singh	S. Singh
"	"E" S. Lakheria	R. Nanda	R. Jain
"	"F" M. Sah	R. Shah	P. Dattani } Tie
"	"G" P. Dev	S. Sah	
Long Jump	"A" C. Derji	S. Bishi	N. Kumar
"	"B" N. Redericks	P. Singh	C. Wangthuk
"	"C" P. Jauwal	P. Jangpangi	A. Gonsalves



Events		First	Second	Third
Long Jump	"D"	R. Jain	A. Karki	A. Mehta
"	"E"	S. Pancha	P. Des	L. Merchant
"	"F"	A. Gururani	V. Marini	R. Shah
Hop, Step & Jump	"A"	N. Kumar	A. Jala	A. Singh
"	"B"	N. Rodericks	R. Sinha	R. Marini
Discus Throw	"A"	V. Agarwal	M. Kohli	A. Singh
"	"B"	J. Sandhu	P. Singh	C. Wangchuk
"	"C"	A. Gonsalves	P. Singh	P. Jamwal
Shot Put	"A"	V. Agarwal	M. Kohli	A. Singh
"	"B"	J. Sandhu	C. Wangchuk	N. Todd
"	"C"	K. Sharma	P. Singh	M. Pinto
"	"D"	C. D'Souza	A. Pande	S. Adams
Ball Throw	"E"	P. Rana	P. Raurela	S. Lakhotia
"	"F"	S. Sah	S. Singh	R. Sah
110 m. Hurdles	"A"	P. Basera	R. Bhundary	N. Joshi
"	"B"	R. Kochak	S. Gnel	N. Todd





Events		First	Second	Third	
110 m. Hurdles	"C"	R. Pandya	R. Sharma	P. Jaiwal	
"	"D"	C. D'Souza	L. D'Souza	A. Bunkel R. Khatri	} Tie
40 m	"E"	A. Jeddy	K. Nanda	V. Mahat	
50 m	"F"	P. Gururani	S. Srivastava	M. Shah	
75 m	"D"	C. D'Souza	P. Jindal	C. Kooler	
"	"E"	K. Nanda	A. Wilson	P. Swarnop	
"	"F"	P. Gururani	S. Sah	S. Srivastava	
100 m	"A"	C. Desai	N. Seth	P. Batura	
"	"B"	J. Sandhu	N. Rodericks	L. Rodericks	
"	"C"	S. Shah	P. Jaiwal	R. Gupta	
"	"D"	R. Jain	L. D'Souza	P. Jindal	
"	"E"	A. Jeddy	A. Wilson	H. Singh	
"	"F"	P. Gururani	S.K. Sah	S. Banja	

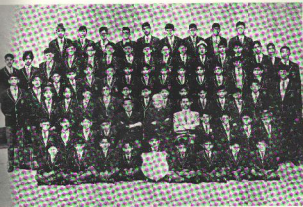


Staff members who took part in the Billiards Tournament with Mr. R.L. Das who presented the Shield.

Events		First	Second	Third
150 m	"C"	S. Shah	R. Pandya	H. Chopra
"	"D"	C. D'Souza	L. D'Souza	C. Keelot
"				R. Singh
"	"E"	K. Nanda	A. Joddy	A. Wilson
200 m	"A"	C. Dongi	N. Seth	N. Kumar
"	"B"	R. Marini	I. Rai	S. Goel
"	"C"	S. Shah	R. Gupta	R. Pandya
"	"D"	R. Jain	C. D'Souza	L. D'Souza
400 m	"A"	N. Seth	R. Bashir	A. Jain
"	"B"	R. Marini	P. D'Souza	I. Rodericks
"			R. Bhambhani	
"	"C"	S. Shah	P. Jamwal	P. Singh

Events		First	Second	Third
100 m	"A"	N. Kumar	A. Jain	P. Bora
"	"B"	P. D'Souza	R. Marini	R. Bhattacha
Shuttle Relay	"E"	St. Paul's	St. Francis'	St. Patrick's
"	"F"	St. Francis'	St. Peter's	St. Paul's
Inter House	"D"	St. Francis'	St. Patrick's	St. Paul's
"	"C"	St. Patrick's	St. Francis'	St. Paul's
"	"B"	St. Paul's	St. Patrick's	St. Peter's
"	"A"	St. Francis'	St. Patrick's	St. Paul's
Medley "A", "B" "C"				
"D"		St. Paul's	St. Francis'	St. Peter's
Best Man	"F"	P. Gururani		
Best Man	"E"	K. Nanda		
Best Man	"D"	C. D'Souza		
Best Man	"C"	S. Shah		
Best Man	"B"	J. Sandhu		
Best Man	"A"	C. Dorji		
Best Athlete		C. D'Souza		
Best Gymnast		Pushpinder Singh		
Winning House		St. Francis'		
Medley				
Raminagar Silver Shield :		St. Paul's		

SPORTS WINNING HOUSE 1971



ST. FRANCIS'

GYMNASTIC TEAM



Standing back Row :—P. Jangnangi, A. Singh, P. Basera, R. Masini.

" *2nd Row* :—J. Sardana, N. S. Mahara, A. S. Dasingra, A. Nayal, N. Todd,
K. Sharma, C. Darji.

" *1st Row* :—S. B. Bhandary, S. Goel, A. Gonzalez, N. Goel, R. Kochak,
L. Lema Leite.

Sitting :—Push. Singh, Mr. G.F. Gomes (P.T.I.), Mr. W. Gomes (S.G.), S.E. Kuhl.

The Independence Day Cup

Final 1971

The final match of the Independence Day Cup was played on the 15th of August between Sherwood 'A' and Sem 'A'. Sherwood had beaten Sem 'B' in the semi-finals while Sem 'A' beat Junior High School to enter the final. The venue of the match was the flats. By 4.30 p.m. the sidelines were packed with supporters of both the schools. The Sherwood cheering line stood on one side with St. Joseph's on the opposite side.

At 4.45 p.m. the teams trooped onto the field. A loud cheer greeted their arrival. The Sherwoodians wore light green football jerseys while our players wore the school colours.

Promptly at 5 o'clock the referee called both teams to the centre of the field, where the two Captains exchanged bouquets of flowers. C. Keeler led Sem while A. Parsley captained the Sherwood team. The players then took up their positions. An expectant hush descended over the spectators, as they waited for the kick-off.

The whistle was blown. The ball was passed and on the sidelines the cheering started. Each side tried to outdo the other in vocal protest and the clamour was deafening. For a few minutes it was an even battle, but then Sherwood began to get the better of us. Gradually they forced us back. Desperately, our players tried to gain control of the ball which time and again slipped through our defence.

The Sherwood left-wing deftly manoeuvred the ball into a suitable position and kicked. Luckily for us, the ball sailed over the goal post harmlessly. The battle recommenced, with each side fighting desperately to gain the upper hand. Again the Sherwood forward line broke through our defence and another hard kick from the left-wing glanced off the goal post. A sigh of relief escaped us.

The ball was kicked off. Our players took possession of it and slowly pressed forward. They got it to the penalty area. Suddenly, the whistle



The juvenile team with Messrs. Lefevre and Kooler.

blew. A penalty kick! We went mad with joy but our gaiti was short-lived. The ball went wide. Now it was the Sherwoodians' turn to yell and cheer. This miss disheartened our players whose playing speedily deteriorated.

Every few minutes the rivals would bring the ball into the penalty area only to miss by a hair's breadth. Suddenly, out sprang a player of ours who cleverly brought the ball to the other goal. He was tackled and beaten. Having come so near and then missing was another blow to the morale of our players. The groans from our sideline and cheers from the Sherwoodians discouraged them still further. Just then the half-time whistle was blown.

The crowd surged on the field and self-styled coaches imparted advice. Excitement ran high when the whistle blew again. The players took up their positions. The game restarted. The supporters yelled their heads off but the cheers from our side fell on deaf ears. In a few minutes the left wing of the opposite team won a good position and kicked true and straight. The ball curved towards the goal and hung in mid-air for what seemed to be an eternity. Then it dropped. To our intense dismay it passed under the bar, into the goal. We were a goal behind. The goalkeeper dejectedly picked up the ball and passed it to the centre forward.

The ball was again put in motion. Another shock was in store for us. In less than ten minutes the inside left took a shot at the goal. The goalkeeper found himself picking the ball from under the net for the second time in the game. This put us two goals behind Sherwood, and time was running short.

The rest of the game was uneventful save for a few near misses by players of both sides. The Sherwoodians maintained their lead till the very last and the 'end of game' whistle was greeted with groans from us, whereas the Sherwoodians screamed in delight and flung umbrellas and rain caps into the air.

We had not only lost the cup but also the status of juvenile football champions. We had held the Championship for nearly two decades. The prizes were distributed and speeches delivered. We gave the players a hearty cheer when they returned, bearing the runner's up cup. The only consolation was that next year is still there and we will get that cup back at all costs.

S. Kalra (IX)



His Lordship

Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa

Before being appointed Bishop of Lucknow Diocese, Father Cecil de Sa was Vice-General of the Archdiocese of Bhopal and Parish Priest of St. Francis of Assisi Church in the same diocese.

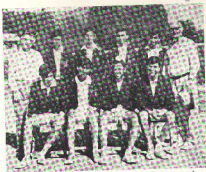
Father Cecil was educated at St. Francis' de Sales' High School, Nagpur and studied at St. Charles' Seminary, Nagpur. Since his ordination at Nagpur in 1948 he has had a varied pastoral experience chiefly in the educational field. For some time he was a professor at St. Charles, Seminary. After his Master's Degree at John Carroll's University, Cleveland, U.S.A. he held the post of Principal of St. Francis de Sales' High School Nagpur, for seven years and then later the post of Principal of St. Aloysius' College, Jabulpore for 6 years. On his return to Bhopal he served for some time as Superintendent of Asha Niketan—an institute for the rehabilitation of the mentally retarded and physically handi-capped. He is now 49 years of age. All of us here at St. Joseph's wish His Excellency many years of fruitful service in the vineyard which has been so carefully nurtured by the line of illustrious prelates who have preceded him.

Tennis

A record number of boys joined the Tennis Club this year. Although the weather was very much against us from April until the beginning of October, the standard of play has improved very much.

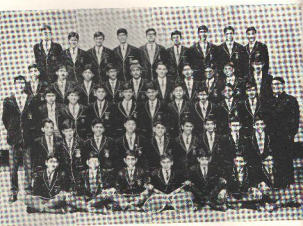
The tennis courts this year were the scene of many hard fought games, especially in the tournament in which the Brothers, up for the holidays, took part. The final game was a memorable one. The Principal of St. Joseph's, Calcutta and N. Seth beat Chopra and Sanwal by a small margin.

A Special word of thanks to the Principals of St. Columba's, New Delhi; St. Joseph's, Calcutta and St. Joseph's, Naini Tal for contributing generously towards the enjoyable evening the winners and runners-up had in town.



The Combined team of St. Columba's and St. Joseph's.

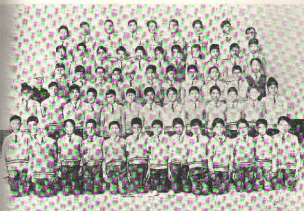
TENNIS CLUB SENIOR MEMBERS



The highlight of the year was the arrival of Mr. O'Sullivan and his tennis team from St. Columba's, New Delhi. We were very disappointed that they came during the Dussehra holidays, as most of our star players had gone home for their holidays at that time. However, we had a few star players left—Ian Rodericks, S.S. Bisha, H.M. Natarwala and S. Engineer. An all out drive was made to improve on service and net-work during the next few days.

In their encounter with St. Columba's on the 3rd morning, all gave a very good account of themselves.

TENNIS CLUB JUNIOR MEMBERS



The 20th U. P. State and Inter-District Table Tennis Championships

The venue of the 20th U.P. State and Inter-District Table Tennis Championship was Government Lacer-College, Jhansi. This meet which commenced on the 24th of September lasted five days. In it twenty-seven teams participated, all of whom put up a good fight for the Championship.

Our departure from Naini Tal, was a lively one. Many boys from our College came down to the bus-stop to see us off. The Local District Table Tennis Officials were also present. After being thoroughly briefed, we



boarded the bus. There was not a moment's peace, as boys, both big and small, continually stretched out their hands to shake hands. Frequently, encouraging remarks were thrown at us. Presently, the driver rounded the horn and continued until the road was clear. During these last few moments, the yelling reached its peak, but soon faded away as the bus moved forward and rounded the bend.



March past before the start of the T.T. at Jhansi

The trip to Jhansi was uneventful, and, having arrived there, we proceeded towards the Government Inter-College where we were shown our quarters. As the matches were to commence the next morning, we retired early.

We awoke early next morning and made preparations for the events of the day. We found that the first three days were laid aside for team events. By the end of the third day we were all happy as we had gained the prestige of being the Junior Champions. Our Seniors too did well, but were very unfortunate as they clashed with the Kanpur University Team which later were ranked second. The Lucknow Men's Team won the Men's Championship and the Dehra Dun Girls Secured the Women's Team Championship.

The excitement mounted only towards the end of the open events when it was seen that A. Dhawan, the former men's individual Champion, might not retain his title.



However, on the second of October, he proved to the spectators that he was still unbeatable. The Junior individual championship was won by S. Yew, who also won the Championship last year. The Women's individual champion was won by V. Bhushan, who was the runner-up last year.

Thus ended the 20th U. P. State and Inter-District Table-Tennis Championship. We gladly returned to Naini Tal with our well-earned trophy. Let us hope that in 1972, Naini Tal District will not only retain the Junior Team and Double Championships of the U.P., but also take a few Senior successes as well.

N. Rodericks

Senior Individual T.T. Champion of S.J.C.

1971.

SEM'S SENIOR T.T. TRIO, Nos. 1, 2 and 3



Standing : (L to R) Rev. Br. J.A. Hughes, Mr. Palor Singh,
Sitting : " N. Rodrigues, J. Randhava, G. Goncalves.

INTER — HOUSE TABLE TENNIS 1971

	'1st Table'	'2nd Table'	'3rd Table'	'4th Table'	'5th Table'	Totals
St. Peter's	4	1	4	4	4	17
St. Patrick's	2	4	3	3	2	14
St. Paul's	3	3	1	2	3	12
St. Francis'	1	2	2	1	1	7

TABLE TENNIS CHAMPIONSHIPS OF 1971

1st Table

Singles : N. Radcliffe

Doubles : G. Gonsalves & J. Randolph

2nd Table

Singles : R. Kumar

Doubles : R. Kumar & A. Mehrotra

3rd Table

Singles : W. Chhimi

Doubles : S. Kakar & S. Tikku

4th Table

Singles : L. Mascarenhas

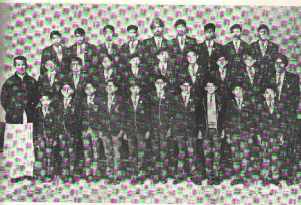
Doubles : L. Mascarenhas & S. Suci

5th Table

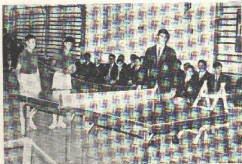
Singles : M. King

Doubles : M. King & D. Conquest

TABLE TENNIS WINNERS
with
Br. Hughes & Mr. Balbir Singh



- (L. to R.)
- Front Row:* A. Mohentes, S. Suri, S. Lakhotia, D. Conquest, R. Sawhney, A. Bunkhi, G. Singh, S. Tikku, R. Chopra, M. King.
- 2nd Row:* L. Mascarenhas, S. Kakar, B. Doo, A. Mehrotra, G. Goncalves, W. Chhimel, J. Hewitt, R. Kumar.
- 3rd Row:* R. Suri, A. Vaidh, J. Liu, M. Virmani, J. Ranaiva, B. Bhatt, N. Rodericks, I. Rodericks, G. Pann.



FIRST TABLE

Ian & Neil Rodenicks meet J. Randhwa & G. Gonzalez in the Doubles.



Mr. C.L. Sah Thulgharia congratulates Ian Rodenicks at the end of the T.T. Meet.

George Saupin

Who has now the honour of being raised to the dignity of Bishop of Daltonganj sent us this lovely letter. "These lines come from an old student of Sena. My two brothers **Ranul** and **Maurice** and I were partly educated at St. Joseph's and left there in 1935. I wish to share with all those who have had a hand in my education the simple joy of being asked to bear a heavier burden of office in the church and to ask for your prayers." On June 26th the announcement was made of my election as Bishop to the newly-created diocese of Daltonganj, Palamau Dist. Bihar. The Bishop-Elect of Daltonganj belongs to a well-known Catholic family who served for many years in Uttar Pradesh. George V. Saupin was born on the 23rd of August in 1923 at Naini Tal. At that time his father was stationed in Lucknow as Traffic Inspector of the former-known East Indian Railway. After his time at St. Joseph's, George was transferred to St. George's College, Missouri where he completed his Senior Cambridge and did his Inter Science Course in 1943. He served for two years (1944-46) in the Indian Navy and then joined the Jesuit Novitiate of the Ranchi Province in June 1947 and was ordained in Poona on 24th March 1958.

During the past thirteen years, Fr. George Saupin was engaged in various fields of activity—all of which in God's designs were to fit him for the burden which God was to lay on his shoulders. One of his first assignments was at the Agricultural Training School Singarha, Hazaribagh, whence he was transferred to the Staff of St. Xavier's Ranchi in 1961, where he was eventually appointed Rector. From 1968 to the time of his nomination to the See of Daltonganj Fr. Saupin was Episcopal Vicar of Hazaribagh and Palamau in the Archdiocese of Ranchi.

With the appointment of the Right Rev. Fr. George V. Saupin, S.J. to the new Episcopal See of Daltonganj, Bihar, the Diocese of Lucknow has given the Church in India the first Bishop ever born within the territorial limits of its jurisdiction.

Our Annual Aquatic Meet

The sixteenth of September was welcomed by brilliant sunshine and a cloudless sky. It was the day on which the Ninth Annual Aquatic Meet was held at our School. The first half of the day was spent in preparing for the grand function.

The prizes were splendidly arranged on the prize stand. Two medals were donated by Mr. K.L. Dua, for the two most promising swimmers. By lunch-time everything was ready.

The four house flags fluttered gaily in the breeze. At one O'clock all the swimmers assembled at the swimming pool. Sometime later, the Chief Guest, Mr. Krishna, was given a warm welcome. He was followed by the rest of the schoolboys.

When all the spectators had seated themselves, Ben. Comber announced the events which were to be decided that day. Then Bro. McGrath started



the first race. As the race commenced, the students started cheering for their respective houses.

The events which had been decided the previous days had put St. Paul's House in the lead. Gradually St. Francis' and St. Peter's drew close to St. Paul's. All the spectators enjoyed the keen competition between the four houses.

Time flashed by as we watched the swimmers glide through the crystal clear water. At the end of the house events a big surprise awaited us. Bro. Deff, our class teacher, returned to Naini Tal, with Bro. Foley. Both of them were welcomed to the Aquatic Meet.

Then we had the Musical Chairs. While one of the boys played music, the participants walked around a row of chairs. When the music stopped



Musical Chairs

they would dive into the water, swim across, climb up on the other side and try to occupy a chair. The game was very exciting, and, at last, a classmate of mine won the game.

After the Musical Chairs we had an exhibition Water-Polo match. One team represented class Eleven, the 'Seniors', and the other represented the 'Rest' of the School. The majority of the school boys were cheering for the 'Rest'. The game began and within a few minutes the 'Seniors' scored a

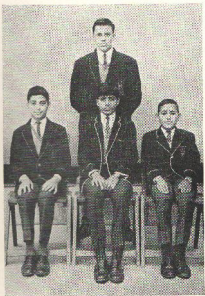


S.S. Bhatt, St. Francis' House Captain, receives the winning trophy from Mr. Krishna.

goal. This was immediately followed by a goal scored by the 'Rest'. The game lasted twenty minutes when the 'Rest' emerged as the victors.

When all the events were over, the boys assembled around the prize-stand for the Prize Distribution. In the house points, St. Francis' came first, and they were followed by St. Peter's, St. Paul's and St. Patrick's. Then we went for tea. That was the end of our Ninth Annual Aquatic Meet which had been very pleasant and enjoyable.

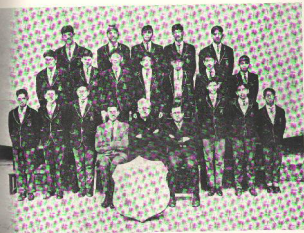
Ajay Khanna
Class IX



BEST MEN IN

- | | |
|--------|--------------|
| A. Div | M. Sen |
| B. Div | A. Gonsalves |
| C. Div | N. Ghandhi |
| D. Div | S. Suri |

WINNING HOUSE IN SWIMMING ST. FRANCIS'



Seated : Mr. G. Kachor, Dr. Burke, Mr. S.C. Sah.

1st Row : A. Sharma, K. Chopra, P.B. Shah, A. Mehrotra, Y. Singh, M. Pereira.

2nd Row : P. Master, N. Hayde, J. Lai, V. Sah, A. Gonsalves, J. Gandhi,
H. Kishore.

3rd Row : S.S. Bisht, D.M.S. Grewal, N. Joshi, D.P. Singh, P. Singh.

The Inter-Class Boat Race

"Row Row! longer strokes, longer strokes!" the voice of the Cox came to us as we wobbled our oars. Today was Boating Day. Our racers were speeding over the Naini lake. The morning had been dull and clouds had blotted out the sun. It had even started drizzling, but our fervent prayers had been answered and the rain had stopped. The whole morning we were in a fever of excitement. The time seemed to pass on leaden feet. However, the moment to depart for the boat-house had finally arrived. Wearing our shorts and vests beneath our uniforms we started off to our boat-house.

Taking out the racers from the boat house was rather a strenuous task but it was accomplished without any harm to either the boat or crews. When the racers had been launched, we sat down to wait for the finish of the first race between the two teams of class eleven and one team of class ten. A huge crowd had gathered to watch the races.

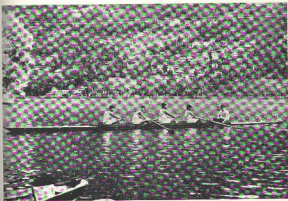
At the signal from the starter the rowers heaved and the boats darted forward. Immediately cheers and yells came from the anxious spectators. The Senior Cambridge "A" team took the lead in their first few strokes, followed closely by the Pre-Senior Cambridge team. During the first round the Senior Cambridge's mighty "A" team rowed, rowed hard. In the second round the distance between them had been extended. Then suddenly the P. S. C. boat began to close in upon the S. C. team. Excited shouts and tremendous yelling came from the watching boys. But the lead the S. C. "A" team had over the P.S.C. team was too great and so the former won. As the teams returned to the boat house a thunderous applause greeted them and everyone rushed to congratulate the S.C. "A" team for their success.

Now the great moment was at hand. We had to row with class eight and seven. Tense with excitement we settled into our racer and rowed to the starting point. Feeling rather self-conscious we manoeuvred into position along with the other racers. As soon as the Signal to start was given, we heaved mightily, but class eight soon overtook us. Following our Cox's advice, we took longer strokes and pulled with every ounce of energy. Steadily we

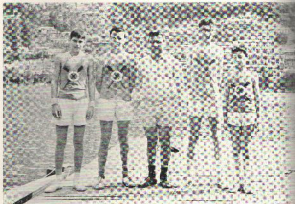
BOW TO STROKE

WINNING TEAM

SENIOR SECTION

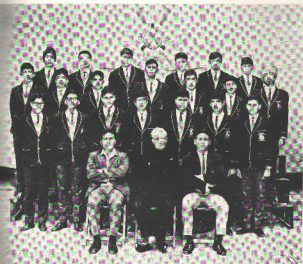


S. Bhat, H. Nataraja, V. Agarwal, M. Kohli, Cox Br. Burke.



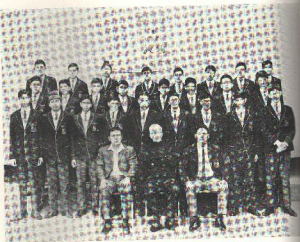
CLASS VIII WINNERS: OF JUNIOR BOAT RACE

SENIOR BOATING CLUB



- Seated :* Mr. F. Gomes, Br. Burke, Mr. W. Gomes.
- 1st Row :* R. Chopra, M. Kohli, A. Jain, P. D'Souza, V. Agarwal, S.S. Bisht, I. Rodericks.
- 2nd Row :* R.S. Bisht, N. Rodericks, P. Singh, H. Netarwala, R.K. Singh, P. Lal, J.S. Ranthawa.
- Back Row :* A.S. Dzingra, C. Dorji, F. Master, N. Todd, S. Engineer, A. Consilera.

JUNIOR BOATING CLUB



Seated : Mr. F. Gomez, Dr. Barbo, Mr. W. Gomez.
1st Row : S. Mehra, D. M. Singh, M. Virmani, N. Hyde, M. Sen, V. Paril,
 F. Kansal, R. Marini, A. Chhabra.
2nd Row : R. Kansal, S. Singh, C. Gilbert, R. Suri, V. Kodank, A. Chamanlal,
 B. Rana, S. Khanna.
Back Row : R. Ahuja, V.K. Singh, H. Singh, C. Kodar, N. Ghandhi, A. Pande,
 P.B. Shah, A. Misrotra.

The Staff and Pupils of St. Joseph's College offer their sincere congratulations to Rt. Rev. Monsignor G.V. Saupin, S.J., on the honour which our Holy Father Pope Paul VI has conferred on a past pupil of the College in raising him to the Episcopal Dignity as Bishop of the Diocese of Dibrugarh, Bihar.

Our Appreciation

"Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime
And departing leave behind us
Footprints on the sands of the time."

With these words we, the Christian Brothers of St. Joseph's College, Naini Tal, would just like to say "Thanks ever so much to you, the Capuchin Fathers of the Bologna Province, Italy, for the spiritual assistance you have rendered to the staff and students of this College from the very first day when you handed over this College to us until you left for your new field of "*labour in other lands*". May God bless you all in your new sphere of activity.

caught up and overtook our opponents. We kept ahead of class eight right to the end of the first round. But as we were rounding the buoy one of our rowers "caught a crab", and we had to wait till he was ready. By this time the class eight boat had already turned and was speeding away. We rowed as hard as we could but of no avail. Instead the distance kept on increasing and at the end they beat us by almost three boat lengths. Class seven, though a younger and inexperienced team, did very well.

The Inter-House race was held the next day and St. Peter's House proved superior to St. Francis' in the final race.

This year we had over forty members in the boat club. The interest shown in the club is a guarantee that it has now been established on a firm footing and as the years go by, more and more boys want to join but Dr. Burke seems determined to keep the number to a workable size.

V. Puri

Class IX



Old Guard of our Boat House for Half a Century :
Sri Prem Singh

The Scouts of Sem

The Scout Troop of Sem was founded a few years ago. Many boys are very enthusiastic to become Scouts. Boys are allowed to become scouts when they pass class six. This year the scouts have been for many hikes to Bear Mountain, Snow View, Land's End, Camel's Back and Tiffin Top and enjoyed these outings. This year unfortunately we could not go camping on account of the bad weather.

The Scouts organised a fete which was a big success and enjoyed by all.

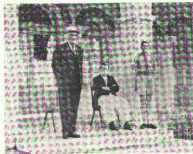
The 7th of July was a Red Letter Day for the Scouts of St. Joseph's College. It was on this day that the scouts were to be invested. We had



Dr. Nasir Hameed, Commissioner, U.P. Boy Scouts invests the Scouts.

been practising for this auspicious day and were also prepared if it rained. At 3.30 p.m. we were ready to receive the Commissioner of Scouts for U.P., Dr. Nawab Hussain. As our Scout Master blew the whistle we doubled onto the parade ground.

After the commissioner had hoisted the flag, we took the scout oath. The Commissioner then invested the scouts, who were proud to receive their tenderfoot badges. After that we pledged to keep the scout oath. Some scouts demonstrated the use of various knots and others showed how to administer first-aid. Next our Scout Master asked the Commissioner



Dr. Nawab Hussain, Commissioner for Scouts in the U.P.
addresses the St. Joseph's Scout Troop.

to address the scouts. The Commissioner talked about the good of scouting and how his yearly visit to Naini Tal was never complete without his visit to meet the Sam scouts. Our scout master then thanked the Commissioner who took the salute while we marched past.

N. Ghosh
Bear Patrol Leader

A. Bhunia
Leopard Patrol Leader.

The First National Convention on Camping-

(Organised by the Indian Camping Association)

I was very fortunate to be invited as an out-station delegate to the first National Convention on Camping in India which was held at the Y.M.C.A. Tourist Hostel, New Delhi on the 11th of September 1971.

The main object of the Indian Camping Association is to promote camping programmes and in particular to help its member organisations in developing and implementing their programmes. It seeks to do this by organising seminars of those interested in this field of public endeavour by developing necessary skills of camp leaders for the organisation of different types of camps, drawing up standards of equipment and their supply to individual groups of campers and developing camp sites.

Commander M.S. Kohli, President of the Indian Camping Association, welcomed all the delegates. The Panel of discussions was on the following subjects :

The Role of camping in India

Camping and Tourism

Camping and Education

Camping and Trekking

and Selection of National Camping Sites.

Speeches were made by the following:

Mr. Justice G.D. Khosla, Ex-Chief Justice of Punjab.

Mr. B.N. Ramon, Director General of Tourism and Transport

Mr. H.C. Sarin, President of the Indian Mountaineering Foundation spoke on the need of these camp sites to help trekkers and the importance of a Camp leader.

Mr. B.N. Ramon pointed out the need of camp sites to encourage tourism. He was willing to give his full cooperation to promote camping in any way in which it would benefit the tourists, and in this way earn foreign exchange for our country.

Mr. Nawab Husain, Commissioner of Scouts, U. P., spoke on the selection of National Camping sites and emphasised the importance of water and wood in the selection of a camp site.

The Seminar terminated at 4.00 p.m. with a word of thanks by Mr. H. C. Sarin to all the delegates for their presence there and their patience in listening to all the speeches.

G. Kevlar.

The I.S.C. Class Picnic

With their stoutest pair of shoes on, thirty-six colourfully dressed boys set out on the long trek to their picnic spot, a place which was very near Garam Pani.

The I.S.C. 1971 is an energetic class and though many of our 'pessimists' tried to discourage us we decided to go the Snow View way. The climb to Snow View was the best part of the journey. Everyone was in high spirits and no one felt the strain. From Snow View to Ratti Ghat the boys talked less and panted more. We were thankful that Bro. Burke had foreseen that we would be tired and had arranged for a bus to take us to our destination.

We made good time and were 'there' at 10.30. It was a beautiful spot and all those boys who had been advocating other spots must have felt terribly ashamed. It was a beautiful valley with a rivulet flowing between the hills.

Swimming costumes appeared as if from nowhere and the air was filled with the shouts and splashing of the boys in the rivulet. Fishing rods were made on the spot and the morning was spent fishing. Even some of our Sikh Lays very kindly lent their turbans for "Operation Fish Catching".

The cry 'lunch is ready' soon went up. With their spoons and plates in hand everyone lined up to receive his rations. It was a most sumptuous meal and our class Tarzans went up for three helpings.

The sun was too intense in the afternoon and most of us drowsed under the shade of a huge Banyan tree. The fishermen were unlucky. With what face would the I.S.C. return? No, we would never go back empty handed. Two kgs. of fish were bought.

When we were returning one villager came up with a four pound golden Mahsheer and gave it to Bro. Burke. He refused to accept any cash and said he was presenting it as a token of respect for our class teacher.

Nikhil Seth
Class XI

Our Class Picnic

It was the twentieth of April. The day for our picnic had finally arrived. Unfortunately, the clouds were gathering fast and hiding the sun. Undeterred, we hurriedly washed and dressed, talking in excited whispers all the time. With a quick but heavy breakfast we were all set to leave.

The Principal, who was going with us, appeared soon, and by his glowing countenance we surmised that he, too, had partaken of a hearty meal. With light hearts, but heavy knap sacks, we set out. Our destination was Kainchi, which was fifteen miles away.

Undaunted by the prospect of a long walk we ran or walked fast at the beginning, but soon the steep walk began to take its toll. It was no wonder that by the time we reached Bhowali we were pretty worn out. Still, a short rest wrought wonders and soon we were jauntily stepping along the road. Yet, we aren't supermen and soon the jauntiness gave way to fatigue. So we had to rest again.

After crossing a stream and walking about a mile across fields, we finally reached Kainchi. The first thing we noticed on reaching it was the impressive temple. Coloured a deep pink with a bit of white and yellow it presented a striking spectacle. This was the abode of the renowned Neem Karoli Baba.

After a pleasant meeting with the Baba, who was most hospitable, we thankfully sank to the ground to rest our weary limbs. After a brief rest we were quite refreshed and the idea of lunch was most exhilarating. After half-an-hour lunch was served. We ate a hearty meal but a sudden downpour dampened our spirits.

Luckily, the rain soon subsided and with a wild cry we rushed down to the stream beside the temple. A few amateur anglers tried their luck but to their disgust they were rewarded only with tadpoles. Still, one of them did catch an atom of a fish.

A few of our merry clan slipped into the stream but suffered no damage save wet clothing. Some of the adventurous type went off into the

hills, but they returned in a hurry because of a fresh downpour. Back to our shelter we went to get away from the rain which was falling in sheets.

We had been so busy that we did not notice the time flying. It was time for tea. With a mug of tea, biscuits, peanuts and pastries in our hands we sat down to play cards. After a few games we found it was time to return.

The return journey was to be made by another road which, though much steeper, was supposed to be shorter. We learnt later, much to our dismay, that the distance was about the same both ways. We set out quite cheerfully but as the road grew steeper, our silence grew deeper. Soon the only sound was that of heavy breathing and occasionally a wheezing cough.

A few of the stouter boys found it pretty hard going and it was our arduous task to help them along. Meanwhile, darkness enveloped us and our occasional shouts echoed eerily among the hills. The solitary light of the lone tea-shop was one of the most gratifying sights we had seen. It filled us with new energy and soon we were there.

After a fairly long rest we moved off towards school. We parted with the dayscholars in Malli Tal and continued to school ourselves. On reaching, we quickly washed and undressed and gratefully snuggled up in our blankets and blissfully went to sleep.

S. Kalra & R. Kansal

Class IX

A Visit to Kedarnath

My heart bounded as I read my father's letter. We were going to Kedarnath during Dusshera Holidays. The last class day flew by, and I waited impatiently for my parents to arrive. At last I saw our car pulling up the hill-side. Soon we were on our way to Rudra Prayag.

We travelled the whole night. Next morning, as dawn broke over the mountains we reached Rudra Prayag. We were supposed to meet my uncle here. On finding that he had not yet arrived we went to the Rest House to watch some sleep, as almost the whole night we had been awake.



Soon my uncle, aunt and two cousins arrived in a pickup van. The final preparations for the journey were made. Now we were to go to a village called Gaarikund, from where we would walk down mules up to Kedarnath. After a fairly light breakfast, we set off.

The journey was accomplished in about six hours. As we bounced along the hill road, I felt as if all my bones were broken. I had sore joints and painful limbs as we alighted at Gaarikund. A strong breeze freshened me up. As I looked around, I was filled with a strange awe at the sight of towering mountains surrounding us.

We spent the night at the Rest House at Gaurikund. Next morning at cock crow, we marched off with heavy sleeping bags on our backs. My mother and aunt mounted the only two horses available.

As we trudged along, we were amazed by the beauty of the country around us. Waterfalls fell in graceful arcs over steep cliffs. All the colours of the rainbow were reflected in the crystal clear water. Brooks bubbled happily as they rushed down the mountain side.

Gradually, we climbed higher and higher. Our backs ached, and the sleeping bags greatly retarded progress. Several times we had to lower our bags. After brief rests, we would again gather up our bags, and drag ourselves up the steep hillside.

By noon, we had covered about six miles. Most of us were hungry by now. At a small village, we ate a humble but hearty meal. This greatly refreshed us. After resting for about half an hour, we set off again with renewed vigour.

The ranges of mountains stretching out far into eternity filled me with a feeling of sheer bliss. Often we stopped to admire the beauty of the country. Below us was the swift flowing river Mandakini, and above us, the snow-capped peaks.

Suddenly, an awe inspiring sight came into view. Standing majestically in front of us was Kedat Parvat (23,700 ft.), at the base of which Kedarnath is situated. The glistening snow over the light brown rock, which could be seen in patches, was a marvellous contrast. This beautiful scene sent a thrill of joy through me.

After about half an hour more of arduous climbing, we reached Kedarnath. It was a rather small village with tiny low-roofed houses. The beautiful scenery all around was enchanting. We managed to secure accommodation in a Dharmshala. All of us immediately lay down to rest our aching limbs. After a cup of tea, we felt quite refreshed.

When we had rested, we decided to visit famous temple of Shiva. We were padded up in overcoats, mufflers, and other woollens, still the biting cold wind cut through them like a hot knife through butter.

We soon reached the temple. It was a marvellous and elegant structure. After leaving our footwear outside, we went in and took our place in front of

the beautiful scene of Shiva. The chanting of priests filled me with a feeling of sheer bliss. We took "Aarti", and then knelt down in silent prayer.

After the "Darshan", we returned to the Dharamshala, where we ate a hearty dinner. Then the younger members of the company settled down to play cards. After a few games, we noticed that it was almost midnight, so we rolled ourselves in the sleeping bags, and went to sleep.

Next morning, the younger and most active members of the party (my two cousins, uncle, brother and myself) decided to go to a glacier two miles away, where the river Mandakini rises. After breakfast, we set off on foot. We had to do some arduous climbing, but the journey was made very pleasant by telling stories.

We reached the glacier by about ten in the morning. Snow could be seen everywhere. A snowball fight started, and we had a wonderful time. After a delicious lunch, which we had brought with us, we started back for Kedarnath.

The rest of the day was spent in "Darshan" of the temple again admiring and taking photographs of the beautiful scenery around us, and chatting.

Next morning at the break of dawn, we started on our return journey. We accomplished this in about five hours, as we were going downhill. Still, the jerking caused my joints to pain and toes to get badly blistered.

At Gaurikund, we caught the bus to Rudra Prayag. Thus ended an eventful and interesting journey to Kedarnath.

R. Kanwal
Class IX

I. S. C. Class 1971



(L to R)

Back Row : L. Meenas, P. Sah, B. Goud, R. Pandya, P. Jaiswal, S. Jain.

4th Row : S. Engineer, V. Sah, K. Tandon, A. Nayal, K. Meena, V. Joshi, P. Lal.

3rd Row : P. D'Souza, H. Singh, R. Chopra, Poo. Singh, R. Singh, I. Rodrigues, Poo. Singh, R. Shah.

2nd Row : S. Saxena, R. K. Singh, H. Basak, B. Saurav, P. Jain, N. Sethi, S. Chatterji, M. Kohli.

Seated : B. S. Dhill, V. Agarwal, A. Jain, Dr. Datta, S. Kumar, H. Natarajan, Aro. Singh.

Guest : N. S. Bhatt.

A Visit to Kashmir

"Fasten your seat-belts please; we are about to land at Srinagar Airport". The voice of the air hostess came over the intercom as the Pokhar Friendship Aircraft, in which my father and I were seated, clocked over Srinagar. The plane landed smoothly and ran along the runway until eventually it came to a standstill. The doors were opened and we emerged, to be greeted by a cold blast of air.

Having been warned beforehand, we were warmly clad, but the roughest wool was no match for the cold wind that raved along the runway. The impression I got as we drove to the B.S.F. Officers' mess where we were staying, was that cold was the worst enemy of man in Kashmir. The few 'locals' we saw were trudging along the dirty streets with their hands buried in the folds of their poncho-like gowns, (a garment common to all working class Kashmirers). That night I thought eagerly of the fun I would have during my stay in Srinagar.

The next day I woke up with a song on my lips. The sun shone brightly through the windows. We were extremely lucky to get a sunny day, in Srinagar, in January. After breakfast, we set off towards the Dal lake with the intention of going for a row in a Shikara. My first impression of that famous lake was rather disappointing. There was nothing so romantic or exciting about the lake to elicit, as it did, the "oos" and "aahs" from several young ladies nearby. A row in a shikara was a novel and rather exciting experience. After this, we decided to go round the town.

As we drove around Srinagar, I was struck by the filth and squalor that prevailed in the less-modern market places and streets. We also paid a visit to the Shalimar and Nishat gardens. Though there were no flowers to be seen, I could well imagine the beauty of these places when the flowers were in bloom. By this time the sun had been blotted out by dark clouds. It soon started drizzling and the temperature fell. We were very glad to enter the mess and our warm rooms.

A visit to the Nageen Lake, the next day, was rather disappointing. It is supposed to be a busy place during the season, but now it was deserted. The only movement was made by a couple of Kashmiries listlessly rowing their shikaras towards two decrepit house boats.

Finally, the last day of our stay in Kashmir arrived. The following day we were leaving by the first flight for Jammu. We decided to pay a quick visit to Gulmarg. At Gulmarg I finally fulfilled my desire of doing. The return journey was uneventful.

The next day, as we boarded the plane a strange sadness seized me. The aircraft started with a roar and soon we were airborne. The plane went steadily to the south-west and Srinagar was soon lost to sight.

Aminabh Pandey
Class IX

The Tree Planting Ceremony

The first of July dawned bright and clear. We jumped out of our beds light-heartedly. The day was a half-holiday. To add to the joys of that, we were going to a tree-planting ceremony, and would miss evening studies!

Class time flew by on winged feet. Lunch time came and went. Then started an interminable period of waiting. As we wandered about the field, a depressing sight greeted us. Thick, black rain clouds were creeping up the valley. Soon the sun was blotted out, and a light drizzle started. With anxious prayers and hopes, we waited for Dame Nature to play her next card. Soon the rain stopped, but the clouds remained. At last the appointed hour arrived. With raincoats slung over our shoulders we waited for the bus-stop.

At the bus station two vehicles of the Forest Dept. were waiting for us. The site chosen for the tree planting was about two miles from town. The place, Hanumangarh, was soon reached, and we alighted, excitedly.

A crowd had collected where His Excellency the Governor, U.P., was to arrive. We were surprised, and rather pleased to note that the girl school had sent their contingent despite the rain. Dr. B. Gopala Reddi, the Governor, arrived and the speeches soon began.

Before the Governor spoke, another gentleman got up and started speaking. He addressed us very forcefully, but his speech was rather long-winded. At last the Governor got up to speak. His speech was brief and to the point. He said that this tree-planting was not just a gesture but a concrete movement towards protecting our hills. The heavy monsoons caused soil erosion and our hills were becoming lower and lower as the decades passed by. If nothing was done to preserve them, they would slowly be washed away. The only possible remedy for this was—tree planting. He encouraged the competitive spirit among the schools, to see who could plant the most trees. The school which had the most trees flourishing at the end of the year would get a prize the following year.

After the speech, His Excellency awarded the prize to St. Mary's, since they had the greatest number of trees growing. We gave them a hearty ovation. When this was over, we were guided to the spot where we had to plant our trees. The seedlings were already there, packed in mud and polythene bags. We were instructed to tear off the bottom of the bag, dig a hole, and place the bag inside. Then we were to fill the hole with mud.

A strenuous half-an-hour later, we had finished planting the seedlings given to us. Thankfully we eased our aching backs. Feeling more like martyrs who had been stretched on the rack than hard-working school boys, we advanced bus-wards. There was a welcome sight for us near the bus. Two men of the Forest Department were distributing sweets to all those who had planted trees. Clutching our shares, we entered the buses and sank down on the seats. We did not stir until we reached the bus stop.

As soon as the whole party had collected we set off towards school, munching laddoos and chattering all the time. It was an extremely tired but extremely happy group that reached school that evening.

A. Pandey
Class IX

My Report Card

My report card came home,
And my heart it leaps,
But with one look at the marks,
I piteously wept.

Moral Science,
It headed the list,
The passing marks,
I had just missed.

English Language,
Was just as bad.
The marks were atrocious,
And my Dad was mad.

Higher Hindi,
I thought I'd pass.
The marks said, "no",
I had plugged, alas!

Physics came next,
That beastly rot,
The marks agreed,
I'd got a nought.

Chemistry followed directly,
In this I'd tried my best.
But I'd plugged as usual,
Another weight on my chest.

What should follow but Biology,
The subject in which I'm dazed.
But the marks were so terribly bad,
That even I was amazed.

Arithmetic or jumbled figures,
Made no impression on me,
The mark did not either,
Came it was a small three.

Algebra followed suit,
That nonsensical muck.
I knew nothing about it,
'Twas natural I should duck.

A bit too soon came Geometry,
And now I was well and truly stuck.
With a rotten twenty six,
It was just my bad luck.

Having got through this nightmare,
I sat down to think.
I started changing colour,
From pale to reddish-pink.

I knew I was in trouble,
All my entreaties were in vain,
So I resigned myself to fate,
And stoically bore the pain

S. Kufra
Class IX

Spot Light

Vincent Joshi won the first prize in the All India Essay Competition in English "If I were a policeman". He was the recipient of a cheque for Rs. 500/- from Mr. Dwivedi, Deputy Home Minister, U. P., when the latter came to Naini Tal early in November.

I.S.C. Results 1970

36 presented; 36 passed

27 first Div., 8 Second Div., 1 Third Div.

Our Table Tennis boys participated in the U. P. Table Tennis Championship held at Jhansi this year and were instrumental in bringing the Junior Championship Shield to Naini Tal for the first time.

Sharukh Sharashad won the Junior Championship in the Olympic Trap Junior Event in the Naini Tal Shooting Championship held at Delhi this year.

History of St. Joseph's College

As I am sure that many past and present pupils as well as the parents of the boys would like to have a clear picture of the history of St. Joseph's, we give here an account of the foundation and progress of the school over the years in so far as we can glean it from the annals of the College.

St. Joseph's Seminary originally located at Darjeeling and transferred to Naini Tal in 1887 was formally opened in the present site by His Honour the Lieutenant Governor on the 17th June 1889, having been solemnly blessed by His Lordship The Bishop of Allahabad on the 16th June 1889. Until the end of 1887, Darjeeling had been under the jurisdiction of the Vicar Apostolic of Patna who became Bishop of Allahabad on the establishment of the Roman Catholic Hierarchy in India in 1887. In December Darjeeling was handed over to the Bengal Mission of the Jesuits. The Capuchin Fathers had a school in Darjeeling known as St. Joseph's Seminary and when they left Darjeeling, the Staff and Students were transferred to Naini Tal and a temporary residence secured for them at Long View (below St. Joseph's). Here the School was carried on until the Seminary was ready in June '89. In 1885, and while Darjeeling was still under his jurisdiction, Dr. Poci went to Ireland and endeavoured to get the Superior General of the Irish Christian Brothers, Very Rev. Dr. R.A. Maxwell, to give him some Brothers for his Indian Mission. The Superior General could not spare any Brothers at that time. In 1889 by order of Propaganda, the Irish Christian Brothers took over the Calcutta mission and received into their order a Religious Congregation known as the Calcutta Christian Brothers who had charge of the Catholic Male Orphanage and St. Joseph's School in Bow Bazar Street. The Irish Brothers landed in India in January 1890. In June 1891, Dr Poci once again renewed his efforts to get the Irish Christian Brothers into his Diocese. He sent one of his Fathers to Calcutta to interview Bro. Fabian Kennelly, the Provincial of the Brothers there. Dr. Kennelly forwarded the Bishop's application to Ireland. Some months passed by and in March 1892 Bro. Fabian got four Brothers out from Ireland to take over St. Joseph's Seminary at Naini Tal.

On the arrival of the Brothers in Calcutta, Bro. Fabian set out for Allahabad to complete negotiations with the Bishop. He visited Naini Tal, arranged everything with the Bishop, and after a few days returned to Calcutta for the Brothers. The Brothers he selected were Bro. Stephen Cuddy, of the Old Calcutta Congregation, whom he appointed Principal, Bro. Baptist Moloney and Bro. Luke Rice. He could spare no more Brothers at the time and as the attendance at the Seminary was then very small, only 43 pupils, these few Brothers with a few secular teachers were sufficient. On the 22nd of April Bro. Fabian and his three companions arrived in Naini Tal and on the 25th took over formal charge of the Seminary. From that date onwards it was under the direct authority of the Christian Brothers. For some weeks before the arrival of the Brothers, efforts had been made by some outside sources to create an ill feeling against the Brothers and hence it is not to be wondered at, that the Brothers found only a small number of boys when they took over.

On the 19th of September that year the school was examined by the Government Inspector—Mr. Todd. Among his remarks are “The school has been brought under an entirely new management and instruction. The numbers have fallen off a great deal since I visited the school last year, but I am sure this is only temporary. The school is one of great promise under the careful management of its able and long experienced Principal, Br. Cuddy”.

During the winter holidays of 1892-1893, new desks were ordered, maps and charts were made ready, the boys' dining room was decorated, the kitchen enlarged and new utensils provided. However, when the school opened in March it was noticed that only 28 boarders and 10 day pupils were present. The highest number in attendance that year was 42; 28 boarders and 14 day scholars. This was due to a number of reasons. However, it was a blessing in disguise as it gave the Brothers more time to plan and prepare for the future and enabled them to lay the foundations of the present block of buildings. Again at the end of 1893 the school was examined and a concert was organised for the distribution of Prizes at which His Honour Sir Charles Crosthwaite, K.C.S., and the Lt. Governor of the N.W.F.P. and Oudh presided. His Honour stated at the conclusion of the evening's entertainment that it gave him great pleasure to be present and to see how the boys acted their parts. Furthermore since the school was now being more widely known he had no doubt that the numbers would increase, especially when the people



THE COLLEGE MUSTER IN 1893.

Class X



(L to R)

1st Row : J. Rameshwar, P. Bhatia, P. Ahuja, R. Banthia, Y. Negi, W. Srinivasan, N. Joshi, D. Datta, K. Gill.

2nd Row : N. Reddy, A. Mehra, R. Seth, R. Nangia, R. Kapoor, R. Bhargava, D. Singh.

3rd Row : L. Bhat, S. Goyal, A. Dhillon, C. Datta, N. Tandon, R. Joshi, J. Sandhu, P. Jagannathan, T. Mathur.

4th Row : R. Kulkarni, N. Goyal, S. Kaur, H. Chopra, A. Tandon, G. Gonsalves, D. Pandey, J. Varma, R. Sinha, J. Gandhi.

Seated : G.K. Joshi, S. Bhargava, A. Kaur, Bro. McGehee, A. Gonsalves, C. Dhillon, R. Khanna.

learned of the excellent teaching and discipline which were imparted in the Institution. As soon as the school closed early in December, work started on levelling the playing fields, erecting new toilets and providing furniture for a temporary Gymnasium.

The year 1894 opened more auspiciously. The number of boarders and day-scholars had increased. During the year a new kitchen was built and a new bathing room fitted with pipes and heating apparatus superseded the old arrangement. The school now had good playgrounds and a gymnasium and the class rooms and dormitories were large and airy. At this stage a definite course of studies was being followed. The course included the High School or the University Entrance Examination and the Entrance Examination of the Rurki Engineering College. (Recognition for this had been obtained from the Government during the year.) The curriculum therefore comprised English, Latin, Urdu, Mathematics, Science, History and Geography, Drawing, Singing, Carpentry, Military and Physical Drill optional extras were Greek, French and Instrumental music. During the early days of December several applications for admission were received. These had to be studied carefully as the authorities felt that although the numbers were still low it would not do to fill the school with undesirable characters and hence only a small proportion of those who sought admission were selected.

Early in 1895 Br. Stephen died. His death was a great loss to St. Joseph's. He contracted a cold which he neglected. It turned into pneumonia and in a few days he was dead. He was one of the Calcutta Congregation Brothers before we took over. He was born in Meerut of Irish parents and was only 58 years at the time of his death. He was buried in the Military Cemetery on the Bhowali Road, but his remains were brought in more recent times to the Brothers' cemetery at Jodhpore where he was reinterred with his other companions in religion. That year Brs. Baptist Culhane and Paul Doherty joined the Seminary. These two Brothers were long associated with St. Joseph's and their memory is still fresh there. The annual report for the prize distribution states "The attendance has now gone up by 60 per cent. It must not be forgotten that while emphasis is placed on the academic side of life at the Seminary the physical side is not neglected—our football and cricket teams did some good work during the season in competition with the other schools of the station and with the Depot. Our Cadet Corps is keeping pace with the growth and development of the establishment.

In the Inter-School Company Match the team put forward by the Seminary carried off most of the Prizes. Our boys are also taught various forms of Physical and Gymnastic Exercises such as bar-bell drill, dumb-bell drill, fencing etc., and in these they had been greatly encouraged by Col. de Hon'ble La Touche, Commanding the Naini Tal Volunteer Rifle Corps, and by Captain Barry, Adjutant, Naini Tal Volunteer Corps. The number of Brothers on the Staff had now been increased to six and a Matron had been employed whose principal duty was to look after the smaller children.

In 1896 Rev. Br. Baptist Holland was appointed Principal of St. Joseph's. There was a great rush of boarders that year and as the dormitories could accommodate only 116 boarders, several boys had to be refused admission. Some of them were able to secure lodgings in the town and attended as dayscholars. Towards the end of March an epidemic of measles broke out in the school. This upset classes considerably for some time. Some of the boys got pneumonia and had to be sent to Ramay Hospital by order of the Civil Surgeon. However, by the end of May all had recovered and the gloom which lay over the College disappeared and once again joy and happiness pervaded the entire campus. At the end of August the school was examined by Mr. Crow, Inspector of schools. He spent two days at the examination. On the first day he devoted his time to listening to the teaching given, while the second day was spent in examining the children and inspecting the dining room, kitchen, dormitories, boysroom and all other parts of the building. His report was excellent. He asked the school authorities to try to put up more buildings to accommodate the ever-increasing number of boys who sought admission. He suggested that they should apply for a building grant for this purpose. While attention was given to studies, games were not neglected and we read that that year, of the fifteen football matches played by our 1st Eleven against other teams in the station, 9 "wins" and 3 "draws" was the score in favour of the Seminary. Similarly, of the five cricket matches played, the College had 4 "wins" and 1 "draw". The Cadet Corps was now in a flourishing condition, and was becoming more and more effective each year. That year they won a large number of prizes. Br. Baptist was most anxious to enlarge the buildings and hence as soon as the boys went home in December, work was started. It was hoped that the work would be completed for the reopening of school in March 1897 but the contractors gave a great deal of trouble and it was not



THE COLLEGE IN 1897.

possible to have the building ready; hence the school authorities could not admit any more boarders. In June '97 the work on the New Wing was resumed and it was hoped that it would be finished in time for the re-opening of school in '98. Seeing the many applications for admission, it was decided to enlarge the original design considerably so that when the building was completed it would house a minimum of 150 boarders comfortably. Early in '97 the results of the Examination for which the boys sat in November and December began coming in, and it is gratifying to note that of the 62 boys who sat for the Primary, middle and High School examinations there were only four failures. To guard against contingencies, the authorities purchased Stone Cross House and grounds, the former for an infirmary and the latter as a playing field, and garden. At this stage we may be pardoned if we diverge a little and give the reader a brief glimpse into the origin of "Stone Cross". In the year 1839 while on a shooting trip, Mr. P. Barron of Shahjahanpur District, J.P. got information about a lake in the vicinity of Bhim Tal and with difficulty was able to locate it. In the year 1841 the discovery of a lake in the Kumaon area was first mentioned in the "Englishman" of Calcutta. This was followed by a description of the place by Mr. Barron in the "Agra Akhbar". He foresaw great possibilities for Naini Tal and wrote under the title of "Pilgrim". In 1842 it was decided to grant building leases and Mr. Barron was the first to build a house known as "Pilgrim's Cottage" near the Naini Tal Club. He was supposed to be the first person to launch a boat on the lake. It is said that "Stone-Cross", of which we made mention above, claims the same antiquity as "Pilgrim's Cottage". At this time also it was decided to build two handball alleys. It was hoped that they would be ready for the 1st of March '98 when the boys returned to school. The Educational Department made a thorough inspection of the school during the month of August and it is gratifying to note that their comments are most favourable. It is not necessary here to give the achievements in the various games as it would only bore the reader. It is sufficient to say that at this time the foundations of the traditions for which St. Joseph's stood were laid and have withstood the test of time.

The inspector's report makes mention of three noticeable points (i) the increased accommodation for the pupils (ii) the increased attendance and (iii) the distinctions won by the pupils at the previous year. A table showing the gradual growth of the Seminary over the previous seven years will give the reader some idea of the progress made at this time.

Year	Boarders	Day Scholars	Total
1892	33	7	42
1893	27	15	42
1894	34	8	62
1895	81	15	98
1896	107	28	135
1897	114	20	134
1898	143	35	180

From that date onwards the numbers remained steadily around the 200 mark with more pupils trying desperately to get admission. There had to be refused until such time as we had the proper accommodation in the dormitories, classrooms and dining hall. During this time also, work went ahead at the levelling of the play-grounds. The five courts had been erected and very soon a number of boys became expert at handball. At this time the College could boast of one large field for football and cricket, a second play-ground for the smaller children, a gymnasium, two fives and tennis courts.

On the opening day of school in 1899, there were one hundred & twenty five boarders present, and the next day the remaining twenty arrived.

That evening seventeen more pupils arrived to get admission but they had to be turned away. They asked if they could be accommodated in the School hospital but this, too, was refused. It was a blessing because on the 26th April one of the bigger boys took ill. The Civil Surgeon was summoned and to the astonishment of all, he pronounced the illness as small-pox. The boy was immediately removed to the School hospital and the services of a trained Nurse procured to look after him. A few days later two more cases were reported and the College was placed in quarantine for 15 days. The parents and the local people were marvellous during those trying days and it was then evident who were the friends and benefactors of this growing establishment. However, by mid-May the clouds had lifted and once again happiness prevailed in the College. Sports, studies, games and concerts filled up the school year. "The Naini Tal Gazette" of September 30th contains the following reference to the Annual Entertainment of that year. "The boys of St. Joseph's Seminary gave an excellent entertainment in their

school last Saturday afternoon. It consisted of a dramatic performance "The Outlaw" and several vocal and instrumental pieces. The drama was a great success and went well from start to finish". "After the performance, the Lieutenant-Governor, who presided, presented medals to Masters Campbell, Sullivan and Leahy for having respectively obtained the First place in the High, Middle and Primary school Examinations of the previous year". The staff for 1899 consisted of 1 Brothers, 3 Secular teachers, one Urdu teacher, 2 Music instructors (Piano and Violin) and two Sisters who looked after the small boys. By the end of the year the number of pupils had risen to 188 of whom 160 were boarders and 28 were day-scholars. In 1900, as in former years the number of applications exceeded all expectations but there were also some withdrawals. During the early months of this year the work of extending the large play-ground was carried on. On account of the difficulty of the job it was not fully completed by the re-opening of school and hence had to be left in a rough state to be finished during the Christmas holidays.

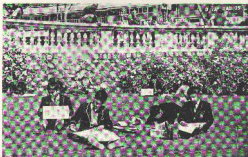
A special Department was started at the re-opening of school. The subjects for this Department were divided between Br. Columban, Fabian and Reppie. On the 1st of May there were 203 boys on the Registers. The School was examined on the 18th and 19th of July by Mr. Cross, Inspector of schools. From the Inspector's report, we just take a few points "A good healthy, vitalising spirit pervades the entire Seminary. Year by year it is gradually realising the high expectations entertained of it from the beginning. Every effort compatible with solid progress and durability is being made to meet the educational requirements of those attending the school. Two pupils have recently passed into the Roorkee Engineering College, while several others are engaged in preparing for the University and for several branches of the Provincial Service." With a remark from Very Rev. Fr. Engelbert O.C., Vicar General of the Diocese we conclude this first instalment of the History of St. Joseph's. "The present status of the school is indeed such that it is a source of real and personal satisfaction to think that it has not only to the fullest realised the high expectations entertained of it from the beginning but also that the sapling planted by me in 1889, has grown into a majestic tree, gathering under its branches more than two hundred fine and manly boys who will carry with them into the world the ideals and inspirations implanted in them at St. Joseph's." (To be Continued).

Our Art drawing

One day our Art teacher came into our class. She called out a list of names of boys who would be going to town on the next Sunday to do some painting. My name was among them. When we went to town, our Art teacher gave us art papers and colours. At about eleven O'clock we were told to start our drawing. I drew a deer with a beautiful scene at the back of it. Later in the day a photographer came and took our photographs. Some days later we were told that the following boys had won prizes, Below 7 years 1st prize Lyndon Rodrigues; 8 to 11 years 1st prize S. Mukerji; 3rd prize B. Prasad. There were three consolation prizes and I got one of them. I liked the exhibition. It was great fun going to it.

V. Marini

(8—10 yrs. group)





Some of the participants in "The Children's on the Spot Painting"
at the Children's Park, Nimi Tal.

WINNERS

Children's on the Spot Painting Competition



(L to R)

Seated : S. Mukerji, L. Rodrigues, R. Malhotra.

Standing : T.M. Syed, B. Prasad, A. Marini, A. Behari, R. Verma,
Mrs. Tahir.

How I missed the plane to Seoul

(Reminiscences of the Delhi Selection Trial)

On a dull, murky Thursday in the last July, an overcast sky threatened a heavy downpour when I took my bicycle and started for home. I was looking forward to a good lunch and an afternoon's rest but when I reached my residence a news item in the daily paper made me excited. I forgot about everything and kept on thinking about that piece of news which concerned my dearest and most favourite hobby—Claypigeon Trap Shooting.

The Second Asian Championships were to be held in Seoul (South Korea) in October and the World Trap and Skeet Shooting Competition were to be held in Bologna (Italy) in September 1971. The National Rifle Association of India (N.R.A.I.) had decided to send teams to both these places and in order to select the members of the team it was holding an intensive training-cum-coaching camp at Delhi from August 13th to August 24th. Only top shooters of the country were to be invited to participate in the camp. Will I be invited? But then I thought that I could hardly consider myself amongst the first ten shooters of claypigeon in the whole of India.

The qualifying standards were also very high. Only those who shot 75% birds in the practice would be allowed to take part in the selection trials and shooters with a score of 85% or more would be selected for the teams. I had very serious misgivings about my ability to achieve these standards.

In the XVI National Shooting Championships in April 1971 I had done fairly well. I had won a gold medal (1st prize) in the Indian Rules Junior Claypigeon event but my score was 71% only. In the International Rules event I had got a Silver medal (2nd prize) with a 64% score. Now, then, could I aspire to the Coaching Camp? Impossible! Just wishful thinking!

My joy knew no bounds when a telephone call from my father (who is a member of the N.R.A.I.) came through a couple of days later informing me that my name was in the list of shooters invited for the camp. To be considered for the Indian team along with that Prince of Shooters—Maharaja Karni Singh of Bikaner, who has brought glory to the country more than